Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ श्रीः ॥

पञ्चनदीय-पंडितसुदर्शनाचार्यसंकलिता

अष्टादशरहस्यभाषा ।

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,

मालिक-लक्ष्मीवेंकटेश्वर छापाखाना,

कल्याण—मुंबई.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ श्रीमते रामानुजाय नमः ॥

पञ्चनदीय-पंडितसुदर्शनाचार्यसंकलिता

अष्टादशरहस्यभाषा ।

अर्थात्

स्वामिश्रीरामानुजाचार्योक्त अष्टादशरहस्योंका
भाषामें वर्णन ।

इसको

गङ्गाविष्णु-श्रीकृष्णदासने
अपने " लक्ष्मीवेंकटेश्वर " छापेखानेमें
छापकर प्रसिद्ध किया ।

संवत् १९८३, शके १८४८.

कल्याण--मुंबई.

सब हक्क यन्त्राधिकारीने स्वाधीन रक्खे हैं.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ श्रीमते रामानुजाय नमः ॥

भूमिका ।

अये सज्जनशिरोमणे ! प्राचीनसद्धर्मार्णवनिमग्नमानसभारतीय-सद्धर्मोंकी क्या दुर्गति होरही है और नूतन असद्धर्म किस किस तरह पुच्छ फटकारते हैं यह सबको विदितही है । इसके साथ यहभी खेदका स्थान है कि, सद्धर्मावलंबनके निर्भराभिमानपूर्ण-मानसभी पुरुष स्वसंप्रदायसिद्धसिद्धांतके लेशसेभी समीचीनरूपेण परिचित नहीं हैं, प्रत्युत स्वसंप्रदायसिद्धसिद्धांतविरुद्ध अहंता ममतादि दोषोंसे अहर्निश अपने आपको अलंकृत करनेमेंही पुरुषार्थ समझते हैं । यथा कोई कोई अद्वैती महात्मा तत्त्वमस्यादिवाक्यश्रवणमात्रसे अपनेको ब्रह्म मानकर स्थाणुवत् स्तब्ध होजाते हैं । वे यह नहीं ध्यान करते कि, हमारी अद्वैतवीथीमें तो शरीरादिका मिथ्याभाव सिद्ध होगया है । तब हम किस बातका अभिमान करैं एवं निजाचार्यरीतिको भी मात्रया नहीं जानते कि, श्रीशंकराचार्यस्वामिप्रभृति कैसेक भगवान्के भक्त तथा नम्र थे ।

एवं वैष्णवसंप्रदायोंमेंभी यही महाअनर्थ व्याप्त होते जति हैं इस हेतु मैं श्री १०८ श्रीमद्रामानुजाचार्यस्वामीनिर्मित अष्टादशरहस्यका भाषामें अनुवाद करताहूं। ये अष्टादशरहस्य जीवमात्रको माननीय है उसपर वैष्णवजनोंको तो प्रामाणिकत्वेन स्वीकार्य है श्रीसंप्रदायानुयायिओंको तो श्रीरामानुजस्वामीके वचन श्रुतिसमान प्रामाण्यस्थान हैं इसलिये इन अष्टादशरहस्योंके प्रमाणित करनेको अधिक लेखकी अपेक्षा नहीं ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यद्यपि इस अष्टादशरस्यभाषामें अष्टादशरहस्यका मैंने अक्षरानुवाद नहीं किया तथापि जो कुछ लिखाहै वह सब अष्टादशरहस्यके अभिप्रायानुकूलही लिखाहै और बहुत स्थानोंमें गीता तथा आलबंदारके प्रमाणभी दिये हैं जो पाठकमहाशयोंको उन उन रहस्योंके प्रामाण्योंमें संदेह न हो। विस्तरभयसेही अष्टादशरहस्यका अक्षरानुवाद नहीं किया कुछ दर्पसे नहीं। मैंने रहस्योंके संक्षेपेण लक्षण दोहोंमें लिखकर उनका नीचे गद्यमें सविस्तर यथामति वर्णन कियाहै।

वैष्णवको कैसा होना चाहिये तथा क्या कुछ करना चाहिये यही इस ग्रंथका प्रतिपाद्य है वहभी श्रीमदाचार्यप्रवरने ऐसी समता तथा सरलतासे प्रतिपादन कियाहै जो वैष्णवमात्रको स्वीकर्तव्य है।

आशा है कि, माननीय महात्मा वैष्णव भगवद्भक्त इस अष्टादशरहस्यभाषाको कृपापूर्वक निहारकर मुझ तुच्छके इस तुच्छ परिश्रमको कृतकृत्य करेंगे। और श्रीअष्टादशरहस्यके अनुवादांशमें कहीं मादृशजीवासाधारण प्रमादानवधानतादि दोषवश त्रुटि हुई हो तो उसे क्षमा करेंगे--यह प्रार्थना करताहै।

आपका पञ्चनदीय सुदर्शनाचार्य.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ श्रीः ॥

॥ श्रीमते रामानुजाय नमः ॥

॥ श्रियै नमः ॥ श्रीहरये नमः ॥

अथाष्टादशरहस्यभाषा ।

अव्याद्वः श्रुतिपाठपूतवदनैर्यं वक्ति सेव्यं विधिर्यं जिज्ञास्यतया वदन्ति सगुणं वेदान्त-सूत्राणि च । यत्साद्गुण्यवशात्समाहितमलं प्रौढैः प्रमाणैः समं यन्नैर्गुण्यविधेश्च्यवेत मितितः कृत्स्नं स नारायणः ॥ १ ॥

चौपाई ।

रामानुजपदकमल मनावौं । जासु कृपा अघ ओघ नसावौं ॥ तिन कह अर्थ रहस्य बखानौं । भक्त निकर जिन पद यश गानौं॥रहस्य अर्थ अतिगहने भासें । तिन उपासना मृदुल न तासें ॥ सबहिं सुलभ ता कारन वरने ॥ भाषा करि निजमति अनुसरने । दोहा अर्थ रहस्य बनाने ॥ तासु अर्थ पुनि गद्य बखाने ॥ भक्तस-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

माज सोच इह ग्रंथा । मनकरि इहविधि गहि हैं पंथा ॥ काल कराल क्रूर अति धायो । विविध कुपंथ हि सुत शत जायो ॥ सुनहु विष्णुके भक्तसमाजा । लाज तिलककी करि करु काजा ॥ १ ॥

यह जीव अनादिकर्मप्रवाहसे संसारसमुद्रमें नितरां निमग्नभी संसारसमुद्रसे निस्सरणके उपायको प्राप्त न होकर प्रत्युत संसारसमुद्रसंसृतिहेतुभूत अहंता ममता रागद्वेषादि विविध दोष संश्लिष्ट तापत्रय परंपरापराभूत जन्ममरणलक्षण जो संसारसागरके अनंत भ्रमर हैं उनीमें घूमता रहताहै कहाभी है—

तें पराग्दर्शिनो जीवास्तत्त्वबोधविवर्जिताः ।
कुर्वते कर्म भोगाय कर्म कर्तुं च भुञ्जते ॥ १ ॥
नद्यां कीटा इवावर्त्तादावर्तान्तरमाशु ते ।
व्रजन्तो जन्मतो जन्म लभन्ते नैव निर्वृतिम् २॥

अर्थात् जो जीव तत्त्वज्ञानरहित हैं केवल बाह्य विषयमात्रकोही जाननेवाले हैं और भोगके लिये कर्म करते हैं कर्म करनेके लिये भोगते हैं वे जीव यथा नदीमें आवर्तसे आवर्तान्तरमें घूमनेवाले कीट सुख नहीं पाते एवं जन्मसे जन्मान्तरमें प्राप्त होते हुये कहीं भी सुख

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नहीं पाते। किंतु यह जीव भगवत्का अंश है कहाभी है--

'ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः॥'

अविद्यावच्छिन्न होनेसे ब्रह्मही जीवसंज्ञाको प्राप्त होताहै इत्यादि जो लोग कहतेहैं वह सब प्रमाण विरुद्ध है। एवं स्वांशभूत जीवको निरंतर संसार कूपमें पतितको देख भगवत् परमकृपालु श्रीनारायणको कृपा उत्पन्न होतीहै कहाभी है--

'एवं संसृतिचक्रस्थे भ्राम्यमाणे स्वकर्मभिः।
जीवे दुःखाकुले विष्णोः कृपाकाप्युपजायते॥'

अर्थात् स्वकर्मपुंजसे संसारचक्रमें निरंतर भ्राम्यमाण जो जीव है इसके विषयमें भगवान् विष्णुको कोई एक विलक्षण कृपा उत्पन्न होती है, उस भगवत्कृपामें वैलक्षण्य यही है कि, भगवत्कृपाका पात्र होतेही जीवको मोक्ष मार्गपर पग धरनेका सौभाग्य प्राप्त होजाताहै। तथा च भगवदनुग्रहकटाक्षनिरीक्षित जीवको आचार्योपसत्तिके लिये सन्मति उत्पन्न होतीहै। आचार्यप्राप्तिरूप महाफलके मनोरथार्थ छै हेतु हैं-भगवत्सौहार्द, यदृच्छासुकृत, भगवदनुग्रह, भगवद्द्वेषराहित्य, सात्त्विकमहानुभावोंमें अनुकूलता और सात्विकमहानुभावोंसे संभाषण कहाभी है--

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

'ईश्वरस्य च सौहार्दं यदृच्छासुकृतं तथा ।
विष्णोःकटाक्षमद्वेष आभिमुख्यं च सात्त्विकैः
संभाषणं षडेतानि ह्याचार्यप्राप्तिहेतवः ॥'

यहभी सकलसंप्रदायासिद्ध है कि, विना आचार्यके और कोईभी ऐसा समर्थ नहीं जो जीवको संसारकूपसे निकालकर भगवत्प्राप्तिका मार्ग बतावे श्रुतिभी कहतीहै--'स गुरुमेवाभिगच्छेत् समित्पाणिः श्रोत्रियं ब्रह्मनिष्ठम्' अर्थात् जिसे भगवत्प्राप्तिकी इच्छा हो वह शास्त्रज्ञ तथा ब्रह्मनिष्ठ गुरुके * ही पास जावे किंतु गुरुके समीप रिक्तहस्त नहीं जाना और कुछ पास न होतो वनसे एक समिधही लेजावे ।

जो लोग आचार्यकृपाको नहीं संपादन करते वे कबी भी इस संसारसमुद्रसे पार नहीं उतरसकते प्रत्युत आचार्यापराधोंसे और भी संसारसमुद्रमें गोते खाने लगते हैं । इसहेतु जीवपर प्रथम आचार्य प्राप्तिकी कृपा करते हैं । और आचार्यभी कपटादिदोषविहीन स्वच्छहृदयसे प्राप्त शिष्यकी श्रीनारायणचरणारविन्दमें प्रपत्ति करा देते हैं । यद्यपि सकलांतर्यामी श्रीमुकुंद

---

* आज कल्हके उदार शिष्योंको इस श्रुतिपरभी ध्यान देना चाहिये.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आचार्यानपेक्षभी स्वयं जीवको अपने चरणमें लगा-सकते हैं तथापि भगवत् पुरस्कारापेक्ष होनेसे यथा स्वयं ज्ञातभी श्रीमैथिलीको मारुतिमुखेनैव अशोकवाटिकामें जाना एवं आचार्यपुरस्कारेणैव भगवत् जीवको स्वीकार करते हैं। और जीव भी आचार्यके कृपापूर्वक कृतोप-देशसेही भगवच्चरणको पासकता है। श्रीवेदांतदेशिकने कहाभी है—

'दर्पोदग्रदशेन्द्रियाननमनोनक्तञ्चराधिष्ठिते देहेस्मिन् भवसिन्धुना परिवृते दीनां दशा-माश्रितः। अद्यत्वे हनुमत्समानगुरुणा प्रख्यापितार्थः पुमान् लङ्कारुद्धविदेहराज-तनयान्यायेनलालप्यते॥'

अर्थात् यथा क्षारसागरसे परिवृत्त और वास्तविक राक्षसोंसे पूर्ण लंकामें श्रीजानकीने मारुतिमुखसे श्रीरा-मचन्द्रमहाजका संदेश पाया एवं दर्पादिसे उदग्र जो इंद्रियादिरूप राक्षस उनसे अधिष्ठित और भवसिंधुसे परिवृत जो लंकारूपी देह उसमें दीनदशाको प्राप्त जो यह जीव है वह हनुमत्सदृश जो आचार्य उन्हीसे भगव-च्चरणको पासकता है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

और अनेकसंदेहोंकी निवृत्तिके लिये तथा अनेक प्रकारके सांप्रदायिक उपदेशोंके लिये आचार्यकी अपेक्षा आवश्यक है यह कार्य भगवत्सेभी होना दुरूह है ।

उक्त प्रपत्तिके तीन आकार (विशेषण) हैं-

अनन्यशेषत्व, अनन्यसाधनत्व, और अनन्यभोग्यत्व, । अनन्यशेषत्व नाम एक भगवत्केही शेष (दास) होना । अनन्यसाधनत्व नाम एक भगवत्को ही भगवत्प्राप्तिमें उपाय मानना । अनन्यभोग्यत्वनाम अपनेको एक भगवत्काही भोग्य समझना अर्थात् हमारा भोक्ता एक श्रीपति नारायणही है प्रपत्तिके इन्हीं विशेषणोंकी भावनाके कारणही मीराबाईने शक्ति आगे शिर नहीं झुकाया । उक्ताकारत्रयसंपन्नही प्रपत्ति पूर्णप्रपत्ति कहाती है । दैववश आकारत्रयसंपन्न न होकर एक दो आकारसे न्यूनता होनेपरभी भगवदनुग्रहसे फलमें न्यूनता नहीं होती यह श्रीरामानुजस्वामीने ही कहा है--"इदमेव करणत्रयं एककरणे न्यूनता चेदपि भगवत्प्रभावतः फलन्यूनता नास्ति" । अभिप्राय यही है कि, भगवत्प्राप्तिही प्रपत्तिका फल है उस प्राप्तिके निरतिशय होनेसे फलमें न्यूनताका संभव नहीं । किंवा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भगवत्प्राप्तिकोही प्रपत्तिका फल कहसकते हैं भगवत्-प्राप्ति तो भगवत्कृपाके अधीन है प्रपत्ति तो केवल भगवन्मुखोल्लासार्थ है तब तो यदि प्रपत्तिके एक भी आकारसे भगवत्कृपा होगई तो फलमें न्यूनताका संभव नहीं। किंतु उक्ताकारत्रयसंपत्ति न होनेसे प्रपत्ति अपूर्णप्रपत्ति ही कहाती है।

यद्यपि उक्त प्रपत्ति भगवत्प्राप्तिमें उपाय है तथापि भगवत्कृपाके आश्रयसे उपाय है न कि, हमने प्रपत्ति कीहै इस अभिमानसे प्रत्युत प्रपत्त्याभिमान भी अनिष्टकारकही है न वा अभिमानरहितभी प्रपत्तिज्ञानमात्रसे, किंतु प्रपत्तिकी उपासनासे संपादित जो भगवत्कृपा उस भगवत्की कृपामात्रके आश्रयसे प्रपत्ति भगवत्प्राप्तिमें उपाय है वास्तवमें यही कहना चाहिये कि, भगवत्प्राप्तिमें भगवत्कृपाही उपाय है, प्रपत्ति तो भगवन्मुखोल्लासार्थ है। यहां पर यहभी अवश्य जानने योग्य है कि, स्वस्वसंप्रदायानुसारी जो पंचसंस्कारादि वैष्णवतासंपादक हैं उनके विना जीवका प्रपत्तिमें अधिकारही नहीं। उन पंचसंस्कारादिके विनाभी जो लोग अनन्यसाधनत्वादि प्रपत्तिके आकारोंको संपादन करते हैं उनकी प्रपत्ति सच्ची प्रपत्ति नहीं किंतु प्रपत्त्याभास है

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

क्यों कि पंचसंस्कारादिहीन प्रपत्तिसे भगवत्कृपा प्राप्त नहीं होसकती। इस हेतु अपनी अपनी संप्रादायानुसार वैष्णवतासंपादक पंचसंस्कारादि पर दृढतर ध्यान तथा विश्वास करना चाहिये अन्यथा अतिशयित पश्चात्तापको समय प्राप्त होगा निश्चय जानो॥

एवं भगवच्चरणचंचरीकचेतनको अष्टादशरहस्य अवश्य ज्ञेय और अनुष्ठेय हैं। वे अष्टादशरहस्य ये हैं

प्रपन्नता, प्रपत्तिनैष्ठिकता, निर्भरता, उपायशून्यता, परतंत्रता, अप्राकृतता, ऐकांतिकता, नित्यरंगिता, परमैकांतिकता, संबंधज्ञानस्वरूपता, शेषभूतता, शेषवृत्तिपरता, नित्यशूरता, मुमुक्षुता, अवधिगोचरता, पराकाष्ठता उपायस्वरूप ज्ञानता और आत्मारामता इति।

अथ प्रपन्नता।

निखिल प्रयोजन वासना, रहित होय हरिशेष। चातक इव जु उपासना, इहौ प्रपन्नता वेष॥ १॥

ये अष्टादशरहस्य अवश्य ज्ञेय तथा अनुष्ठेय हैं और इस कालमें प्रायः लोगोंकी संस्कृतमें गति न होनेसे उन अष्टादशरहस्योंका मैंने यह भाषामें वर्णन किया है जो संस्कृतानभिज्ञोंको सुलभता होजाय वैष्णवोंको ज्ञेय बहुत बातें स्त्रीचर्यामेंभी मैंने लिखी हैं जो छपभी गई हैं।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यथा चातक स्वातिबिंदु विना अमृतकाभी पान नहीं करता एवं अनन्य होकर तथा सकलप्रयोजनोंके मनोरथमात्रकाभी परित्याग कर अपनेको भगवत्शेष समझ जो भगवत्शरणागति है वही प्रपन्नता पदार्थ है। यथा "प्रपत्तिः शरणागतिः"। अनन्यताके लिये कहाभी है-

"एक एव खगो मानी चिरं जीवति चातकः।
पिपासितो वा म्रियते याचते न पुरन्दरम् ॥"

अर्थात् पक्षियोंमें एक चातकही मानपूर्वक जीता है जो पिपासार्त तो चाहे मरजाय किंतु इन्द्रकीभी जलार्थ याचना नहीं करता। एवं चातककी तरह अनन्य होकर भगवदुपासना करनी चाहिये। कहाभी है-

"नारायणपदद्वन्द्वं प्रपन्नो यावदायुषम्।
द्वयमावर्तयेन्नित्यं तस्यार्थमपि चिन्तयेत् ॥"

अर्थात् प्रपन्नको सदा द्वयानुसंधान करते रहना चाहिये। अद्वैततरुमूल श्रीशंकरस्वामीनेभी कहा है- "नारायण करुणामय शरणं करवाणि तावकौ चरणौ। इति षट्पदी मदीये वदनसरोजे सदा वसतु ॥" समग्र गीताका उपदेश देकर अंत्यमें भगवत्ने इसी प्रपन्न-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ताका अर्जुनको उपदेश दिया कि–

"सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज ।अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः ॥"

इसी प्रपन्नताके स्वरूपको श्रीयामुनाचार्यस्वामीने व्यंजित किया है–

"निरासकस्यापि न तावदुत्सहे महेश हातुं तव पादपङ्कजम् । रुषा निरस्तोपि शिशुः स्तनन्धयो न जातु मातुश्चरणौ जिहासति ॥"

अर्थात् हे महेश आप तो असीम ऐश्वर्ययुक्त हैं एतावता आपको मेरी अपेक्षा न होनेसे यदि आप मेरा परित्याग करेंगे तो ऐसे परित्याग करनेवालेभी आपके श्रीचरणारविंदका परित्याग करना तो दूर मैं परित्यागका उत्साह अर्थात् संकल्पभी नहीं करसकता यथा क्रोधविववश हुई मातासे परित्याग कियाहुआ भी स्तन्यपान करनेवाले बालक मातृचरणके परित्यागकी इच्छा भी नहीं करता क्योंकि उस बालकको तो एक माताही आश्रय है, एवं हे महेश ! भगवन् ! मेरे आपही एकमात्र आश्रय हैं तब मैं आपको कैसे छोडूं । और परित्याग करनेवालेका दूसरा परि-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

त्यक्त तभी परित्याग करसकताहै यदि वह बराबरका हो यथा भाई भाई जुदे होजाते हैं। यदि दूसरा बराबरका न हो तो वह परित्याग करनेवालेका भी परित्याग नहीं करसकता यथा यदि पति पत्नीको छोडभी दे तोभी पत्नी तो पतिको छोड नहीं सकती क्यों कि पतिके मरजानेपरभी स्त्रीका और पुरुषसे संबंध नहीं होसकता, एवं हे भगवन्! आपके दास तो अनंत हैं अत एव आप चाहे मुझे छोडदें किंतु मेरा स्वामी तो आपके विना और कोई नहीं फिर मैं आपको कैसे छोडूं—इस स्वस्वामीभावकोभी यहां आचार्य व्यंजित करते हैं। और लोकमें भी कहते हैं कि, बहुते घरोंका पाहुना भूखा मरताहै, दो नावोंमें पैर रखनेवाला डूबता है इत्यादि इस हेतु प्रपन्नतापर दृढतर ध्यान देना चाहिये। इस प्रपन्नताको प्राचीन वैष्णव महानुभावोंने ऐसा निवाहा है कि, जिसका वर्णन कठिन है।

२ अथ प्रपत्तिनैष्ठिकता

कहौं प्रपत्तिनिष्ठता, परम दयाकी रीति।
तृणहु छेद भय मानिवौ, हरिचरणन दृढ प्रीति२

परमदयालुताभी प्रपत्तिपदार्थ है इस हेतु तृणछेदनमेंभी प्रपत्तिविरोध होगा यह जान भय मान जीवनमा-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

त्रपर दया निवाहनी चाहिये । तृणादिभी सजीवपदार्थ हैं उनके छेदनसे दयावृत्तिकी हानि अवश्व होगी । उदाहरण-यथा शीतकालमें एक कपोतीको भीलने पकड कर जालमें रखलिया आप शीतबाधासे सुकडकर वहां ही वटके नीचे पडगया इतनेमें उस कपोतीका भर्ता कपोत वटपर भार्यावियोगसे विलाप करनेलगा, कपोतका विलाप सुनकर कपोती बोली रोवो मत मैं तो भीलके जालमें हूं यह भील अपने बटके नीचे आकर शीतदुखः भोगरहाहै तुम इसके शीत दुःखको कोई प्रकार निवृत्त करो । यह सुन कपोत बोला जिसने तुमको बांधलिया ऐसे शत्रुका मैं उलटा उपकार करूं यह क्या युक्त है । कपोती बोली-नहीं तुमको बडा धर्म होगा इसके दोषकी ओर निहारकर परमधर्म दयाका परित्याग मत करो । (पद्मपुराणमें) कहाभी है-

नवनीतोपमा वाणी करुणाकोमलं मनः ।
धर्मबीजप्रसूतानामेतत् प्रत्यक्षलक्षणम् ॥ १ ॥
दयादरिद्रहृदयं वचः क्रकचकर्कशम् ।
पापबीजप्रसूतानामेतत् प्रत्यक्षलक्षणम् ॥ २ ॥

जिसकी वाणी मधुर हो मन दयाकरके कोमल हो उसे धर्म बीजसे उत्पन्न जाननाचाहिये । जिसके हृदयमें

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दया नहीं और वाणी कठोर है उसे पापबीजसे उत्पन्न जानना चाहिये। तथा-

'आर्जवं चानृशंस्यं च दम इन्द्रियनिग्रहः।
एतं साधारणं धर्मं चातुर्वर्ण्यैर्ब्रवीन्मनुः॥
यज्ञाध्ययनदानानि तपः सत्यं क्षमा दया।
अलोभइति मार्गोयं धर्मस्याष्टविधः स्मृतः॥'

इति।

जीवमात्रको निजप्राणापेक्षयाभी निजधर्म अधिकतर रक्षणीय है कहाभी है-

'यस्य धर्मविहीनानि दिनान्यायान्तियान्तिच।
स लोहकारभस्त्रेव श्वसन्नपि न जीवति॥'

अर्थात् जिसका समय धर्मविहीन बीतताहै वह जीताभी मृतक है। इस हेतु तुम इसके शीतकी निवृत्तिके लिये अवश्य उपाय करो। तब तो कपोतने तृण इकट्ठे करके उनमें अग्नि लाकर डालदी जिसके प्रज्वलित होनेसे उस भीलका शीत निवृत्त होगया। तदनंतर उस भीलकी क्षुधानिवृत्तिके लिये कपोत और कपोतीने अपने शरीरको उस अग्निमें डालदिया जो मांस पक्क होनेसे उसे भक्षण कर भील तृप्त होगया। एवं स्वशरीर-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दानपर्यंतासीमदयाधर्मके निर्वाहसे स्वर्गसे देवता विमान लाये और कपोतदंपतिसे स्वर्ग सिधारनेको कहा कपोतदंपतिने पूछा हमने तो कोई यागादिक नहीं किये तब हमको किस हेतुसे स्वर्ग जानेका सौभाग्य प्राप्त हुआ । देवता बोले–तुमने जो स्वशरीरदानसे इस भीलकी प्राणरक्षा कीहै इसी परमधर्मके हेतु तुम्हें स्वर्ग प्राप्त होताहै तब कपोतदंपति बोले--जिस भीलके हेतु हमें स्वर्गप्राप्त होता है उसके बिना हम एकले स्वर्ग नहीं जाते । यह संवाद सुन भीलको असीम पश्चात्ताप हुआ कि, भीलने चिता बनाकर उसमें स्वशरीरको भस्मसात् करदिया । तब तो तीनों ही स्वर्गको सिधारे ।

एवं एक किरात मृगयार्थ बनमें गया आगे दूरसे सिंहको देख उद्विग्न होगया दैवात् वहां एक वृक्षपर बानरी कोई बैठीथी उसने अपनी पुच्छ पकडाकर उस किरातको वृक्षपर चढालिया इतनेमें वहां सिंह आकर बानरीसे कहनेलगा--मेरा भक्ष्य तुझे रखना उचित नहीं इस हेतु इस पुरुषको नीचे गिरादे । वानरी बोली कि, जो शरणागत पुरुष मुझे रक्षणीय है उसे मैं तुझे भक्षणको कैसे देदूं । सिंहके बहुतप्रकार कहनेपरभी वानरी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

महानुभावाने एक न सुनी। इतनेमें वानरीको निद्रा आगई सिंह किरातसे बोला--हे किरात इस वानरीको गिरादे जो मैं इसे खाकर चलाजाऊं तेरे घरकाभी मार्ग खुलजाय यह सुन कृपण किरातने स्वधर्मके साथ वानरीकोभी धक्का देकर गेरदिया किंतु वृक्षविहारमें चतुर होनेके कारण किरातधर्मके साथ वानरी भूतलपर न गिरकर बीचमें ही सह्मलगई फिर वहांही आ बैठी साथही किरातके मुहँपर उदासीनताभी आबैठी कि अब वानरी मुझे गेरदेगी। तब सिंह बोला कि--हे वानरि ! तू ऐसे कृपण विश्वासघातीकी क्या रक्षा करती है इसे गेरदे। महानुभावा वानरी बोली-

'परोपकारार्थफला हि गावः परोपकारार्थफला हि वृक्षाः॥ परोपकारार्थफला हि नद्यः परोपकारार्थमिदं शरीरम्॥ १॥ एकतः क्रतवः सर्वे समग्रवरदक्षिणाः। एकतो भयभीतस्य प्राणिनः प्राणरक्षणम्॥ २॥'

अर्थात् सर्वात्मना पशु गौभी परोपकारार्थ हैं जड जो वृक्ष और नदी वेभी परोपकारार्थही हैं तब तो मुझ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वानरीके इस शरीरको अवश्य परोपकरार्थ होना चाहिये ॥ १ ॥ और सर्वस्वदक्षिणावाले अनेक यज्ञोंका जितना फल है उतनाही भयभीतकी प्राणरक्षामें फल है, तब मैं इस शरणागत भयभीतको कैसे गेरदूं ।

एवं रूपेण वानरीकी दृढता देख सिंह अन्यत्र चला-गया । तब किरातसे वानरी बोली--बडे कष्टकी वार्ता है कि तुम्हारी क्षुधानिवृत्तिमात्रके लिये भी मुझ पापाके घर कुछ नहीं तथापि तुम धैर्य धरो मैं तुम्हारे लिये वनसे फल लातीहूं यह कह वनको चलीगई पीछेसे क्षुधार्त निर्दय किरात उसी कृपालु, वानरीके वच्चोंको भक्षण करगया और उदास होकर वैठगया । इतनेमें वानरीने आकर स्वसंतानाशनवृत्तांत जान किरातसे कहा--उदास मत हो तुझ क्षुधार्तातिथिके भक्षणसे मेरी संतान कृतार्थ होगई और इन फलोंकोभी स्वीकार कर । तदनंतर भी किरातको उदास देख उदाराशया वानरीने पूछा--अब किस हेतु उदास हो, पापावतार

---

१ सिंहने वानरीसे उस भीलको ही मांगा यदि सिंह उस भीलके पलटे वानरीसे वानरीकेही शरीरको भक्षणार्थ मांग बैठता तो अवश्य ही यह महानुभावा वानरी अपने आपको सिंहके आगे गेरदेती । आज कालके दयालुओंको इस वानरीचरितपर ध्यान देना चाहिये।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

किरात बोला घरसे चलते समय संतानने मांसार्थ कहाथा सो मांस नहीं मिला इससे उदास हूं। वानरी बोली मेरे शरीरको बाणसे वेध अंगीकार करो इस क्षण भंगुरशरीरके कृतार्थ करनेको इससे अच्छा अवसर फिर कहां यह सुन दुष्ट किरातने बानरीको बाणसे प्राण रिक्त कर उठालिआ, उधर देवदूतोंनेभी वानरीके लानेको विमान उठालिआ, आकर वानरीसे स्वर्ग सिधारनेको कहा परमसुशीला वानरीने कहा जिस किरातकी प्रसन्नतासे मुझ वानरीको भी स्वर्ग प्राप्त होताहै मैं उस किरातके विना कैसे स्वर्गको जाऊं, तदनंतर उस किरातके तथा किरातभाक्षित स्वसंतानके साथ वानरी इस परमधर्म दयाके निर्वाहके हेतु स्वर्गको गई।

एवं रूपेण शास्त्रमें दयाधर्मका बहुत माहात्म्य कहाहै इसके अनेक उदाहरण प्रसिद्ध हैं विस्तरभयसे यहां दोही उदाहरण दिखायेहैं। इसी दयालक्षणपरमधर्मके निर्वाहको प्रपत्तिनैष्ठिकता कहतेहैं। यद्यपि स्वर्गादि बिषयप्राप्तिके लिये वैष्णवको दया निर्वाह्य नहीं तथापि

---

१ पाठकजी महाशय कुछ आंखमें पानी और मनमें पसीना आया वा नहीं। इस वानरीने अपने इस परमोदार चरित्रसे सिद्ध करादिया कि हमने श्रीमारुतिकुलमें जन्म लिया है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भगवन्मुखोल्लासार्थ अवश्यही दया निर्वाह्य है । और जिस महानुभावके हृदयकमलमें करुणैकनिधि कमला, पति विराजमान हैं वहभी निर्दय हो यह संभावनाही नहीं होसकती इसलिये दयानिर्वाह तो वैष्णवजनोंका स्वाभाविक है । यौगिक करुणाभावनाका अभिप्राय भी इसी दयानिर्वाहसे है । भाषामें भी कोईने कहाहै 'तुलसी दया न छोडिये जब लग घटमें प्राण' ॥

अथ निर्भरता ।

आत्मा देहनिवाहकी, चिंता सकल विहाय । हरिपद जो विश्वास दृढ, निर्भरता सु कहाय ॥ ३ ॥ सुख अरु दुख फलभोग सब, निरखहि कर्मनिदान । सुख अप्रीति अचाहना, तनुचिंताकर हान ॥ ४ ॥ प्रभु निजकिंकरनाशको, सहे न रक्षक होय । स्वामी हरि हो कर्मकर, इह दृढ जाने जोय ॥ ५ ॥ पार उतारहि आप हरि, मोहि कछु करनौं नाहिं ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इह विध आत्मनिवाहकी चिंताहान सराहिं ॥ ६ ॥

देहयात्रा और आत्मयात्राकी चिंताको परित्याग कर अर्थात् स्वयंदेहात्मरक्षाको छोडकर श्रीनारायणके चरणमें जो विश्वासकर निश्चलता है उसेही निर्भरता कहते हैं।

ब्रह्मलोकपर्यंतके सुखकी इच्छा करना उसके लिये यत्न करना फल पाना इत्यादिको ही देहयात्रा कहते हैं। यत्नासामर्थ्यसे वा और कोई हेतुसे देहयात्राकी चिंता भी उत्पन्न होती है उसका जो परित्याग है उसेही देहयात्राचिंताहान कहते हैं, उस देहयात्राकी चिंताका अवश्य परित्याग करना चाहिये क्योंकि जो जो फल प्राप्त होता है वह सब प्रारब्धानुसारही प्राप्त होता है फिर व्यर्थ चिंतासे क्या प्रयोजन ? कहाभी है--

'अवश्यमुपभोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्। नाभुक्तं क्षीयते कर्म कल्पकोटिशतैरपि ॥ मानसं मनसैवायमुपभुंक्ते शुभाशुभम्। वाचैव वाचिकं कर्म कायेनैव तु कायिकम् ॥ यादृशेनैव भावेन यद्य-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

त्कर्म निषेवते । तादृशेन शरीरेण तत्तत्फलमवाप्नुयात् ॥'

अर्थात् जो प्रारब्धकर्मका सुख वा दुःख फल है वह तो अवश्य भोगनाही पडेगा चाहे चिंता हो चाहे न हो । गीतामें भी कहा है–

'न प्रहृष्येत् प्रियं प्राप्य नोद्विजेत् प्राप्य चाप्रियम् । स्थिरबुद्धिरसंमूढो ब्रह्मविद् ब्रह्मणि स्थितः ॥ समदुःखसुखः स्वस्थः समलोष्टाश्मकांचनः ॥'

एवं रूपेण सुख दुःखरूप जो नाम फल है उस सबको कर्महेतुक जानके सुखमें अप्रीति और अचाहना होनी और दुःखमें अद्वेष होना यही देहयात्रा चिंताकी हानि कहाती है । देहयात्राचिंतापरित्यागको महानुभावोंने स्पष्टरूपेण भी कहा है--

'यद्यद्भाव्यं भवतु भगवन् पूर्वकर्मानुरूपम्' 'दिवि वा भुवि वा ममास्तु वासो नरके वा नरकान्तक प्रकामम् । अवधीरितशारदारविन्दौ चरणौ ते मरणेपि चिन्तयामि ॥'

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अर्थात् हे भगवन्! जो जो पूर्वकर्मानुसार होनाहै वह होतो कुछ चिंता नहीं। हे भगवन्! नरकान्तक स्वर्गमें पृथिवीपर तथा चाहे नरकमें भी मेरा वास हो तो हो कुछ चिंता नहीं किंतु शरदऋतुके कमलसे भी सुंदर जो आपका श्रीचरण उसे मरणकालमें भी मैं चिंतन करूं उसकी विस्मृति कबही न हो।

आत्मयात्राका यहां भगवत्प्राप्तिसे अभिप्राय है क्यों कि, भगवत्प्राप्तिके विना जीवके यथार्थस्वरूपका आविर्भाव नहीं होसकता। संसारावस्थामें तो अज्ञान और प्रकृतिके संबंधविशेषसे जीवका यथार्थस्वरूप तिरोहितही रहताहै यहां पर श्रीरामानुजस्वामीने कहाभी है- 'आत्मयात्रा कैवल्यपर्यन्तम्'। उस आत्मयात्राके निर्वाहमें भवभयादिसे महानुभावोंको चिंताभी होती है, उस आत्मयात्राके निर्वाहकी चिंताका जो परित्याग है उसेही आत्मयात्राचिंताहान कहते हैं। यही कहते हैं-'प्रभु निजकिंकरनाशको, सहे न रक्षक होय'। अर्थात् प्रभु अपने पदार्थकी हानिको कभी भी नहीं सहसकता प्रत्युत प्रभु अपने पदार्थका रक्षकही होता है यथा राजा प्रजा का यथा वही श्रीगोविंद गजेंद्रका (धाये गोविंद गजेंद्र उधारे) एवं श्रीहरि स्वामी हैं मैं किंकर हूं इस स्वस्वामि भावको दृढ जानके, प्रभु आपही मुझ दासको संसार

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सागरसे उबारेगा मुझे तो कुछभी उद्धारार्थ कर्तव्यं नहीं है न मैं स्वोद्धारयोग्य कुछ अनुष्ठान करही सकताहूं, एवं रूपेण जो दृढ विश्वास है उसे ही आत्मयात्राचिंता हान कहते हैं । इसी भावपर श्रीकुलशेखराल्वारने भी कहाहै–

'भवजलधिमगाधं दुस्तरं निस्तरेयं कथमहमिति चेतो मास्मगाः कातरत्वम् । सरसिजदृशि देवे तावकी भक्तिरेका नरकभिदि निषण्णा तारयिष्यत्यवश्यम् ॥'

अर्थात् अगाध दुस्तर जो संसारसमुद्र है उसको कैसे तरूंगा हे मन यह चिंता मत कर क्योंकि श्रीनारायणमें जो तेरी भक्ति है वही एक अवश्य तारदेगी ।

एवं देहयात्रा और आत्मयात्राके निर्वाहकी चिंताका परित्याग कर भगवत्के श्रीचरणपर जो पूर्ण विश्वास है उसेही निर्भरता कहते हैं । इसी निर्भरताको श्रीयामुनाचार्यस्वामीने भी कहाहै–

प्रथम आत्मयात्राचिंताहानको कहकर फिर दुहराकर कहनेसे पुनरुक्ति व पूर्वापरविरोध नहीं जानना क्योंकि दुहराकर जो आत्मयात्राचिंताहान कहाहै वह मूलदोहोंके पदार्थ व्याख्यानवशसे कहा है एवं अन्यत्र भी जानना ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

'पिता त्वं माता त्वं दयिततनयस्त्वं प्रियसु
हृत् त्वमेव त्वं मित्रं गुरुरपि गतिश्चासिजगतां।
त्वदीयस्त्वद्भृत्यस्तव परिजनस्त्वद्गतिरहं
प्रपन्नश्चैवं सत्यहमपि तवैवास्मि हि भरः॥'

अर्थात् हे भगवन् सब जगत्के माता पिता पुत्र सुहृत् मित्र गुरु और आश्रय आपही हैं और मैं तो आपका दासानुदास हूं मुझे तो आपके विना और कोईकाभी आश्रय तथा भरोसा नहीं है। 'सर्वधर्मान् परित्यज्य' इत्यादिसे भगवत्ने भी इसी निर्भरताका उपदेश किया है। निर्भरताके फलकोभी भगवत्ने कहा है--

'यदि वातादिदोषेण मद्भक्तो मां च न स्मरेत्।
अहं स्मरामि मद्भक्तं नयामि परमां गतिम्॥'

भगवत् कहते हैं यदि वातकफादिदोषसे प्राण वियोगसमय मेरा भक्त मुझे नहीं भी स्मरण करता तो भी मैं तो अपने भक्तको अवश्य स्मरण करता हूं तथा अपने धाममें बुलालेताहूं॥

४ अथ उपायशून्यता।

कर्म ज्ञान अरु भक्तिको, जो विश्वास निरासु।
उपायशून्यता जानिहौं हरिपदनिश्चय जासु ७

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शास्त्रमें भगवत्प्राप्तिके लिये कर्म ज्ञान भक्ति प्रभृति अनेक उपाय कहे हैं यथा—

'उभाभ्यामेव पक्षाभ्यां यथा खे पक्षिणां गतिः।
तथैव ज्ञानकर्मभ्यां प्राप्यते ब्रह्म शाश्वतम् ॥'
'अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते'

अर्थात् यथा आकाशमें दोनोंही पक्षोंसे पक्षी उड-सकता है एवं जीवभी ज्ञान और कर्मसे ब्रह्मको प्राप्त होता है । कर्मसे अज्ञानांधकार निवृत्त होता है ज्ञानसे ब्रह्म प्राप्त होता है । तथा--

'मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु ।
मा मेवैष्यसि सत्यं ते प्रतिजाने प्रियोसिमे ॥
मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते ॥
भक्त्या त्वनन्यया शक्य अहमेवं विधोर्जुन ॥
ज्ञातुं द्रष्टुं च तत्त्वेन प्रवेष्टुं च परन्तप॥'इत्यादि

भगवत्कहते हैं हे अर्जुन मेरेमें चित्त लगा मेरा भक्त बन मुझे साष्टाङ्ग कर तब तू मुझे प्राप्त होगा जो मेरी शरणको प्राप्त होते हैं वेही इस संसाररूपमायाको तरते हैं । केवल भक्तिसेही मेरे ऐसे स्वरूपको देख तथा जान-सकता है और भक्तिसेही जीव मुझे प्राप्त होसकता है इत्यादि ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तथा च भगवद्भक्तिमें परिपूर्ण होकरभी जो इन सब भक्त्यादि उपायोंको चिरकालसाध्य दुष्कर तथा बिलंबेन फलप्रद जानकर, और अपने आपको अज्ञ अशक्त जानकर, स्वयमनुष्ठीयमान भी भक्त्यादिमें विश्वास न रखकर, केवल भगवच्चरणका विश्वास कर, अपने आपको भगवदेकशेष जान जो अपने आपको भक्त्यादि भगवत्प्राप्त्युपायोंसे शून्य (रहित) जानना (भावना) है वही उपायशून्यता है । कहाभी है—

'लौकिकं वैदिकं त्यक्त्वा परमं वैदिकं बुधः।अवलंब्यानुसंदध्याद्विष्णोः शेषत्वमात्मनः ॥' 'द्वयं हि सर्वसुलभमाचरन् न ह्यपेक्षते । उपायशून्यतां वीक्ष्य ददाति परमं पदम् ॥'

अर्थात् वेदोक्त जो लौकिक धर्म हैं उन सबोंका परित्याग कर (उनमें आसक्ति न कर और उनके फलको

---

१ आज कल्ह तो लोगोंने भगवद्भक्तिको बाजारके बेरोंसेभी सुलभ सुशक जानरक्खा है । २ आज कल्हतो भक्त्यभावसेही हम अपनेको भक्तिसे पूर्णतम समझते हैं और उसके अभिमानमें ही निमग्न रहते हैं क्यों न हों जब मिथ्यावादी कोई कोई अद्वैतसंन्यासीभी संन्यासाभिमानमें मग्न हैं तब सद्वादी वैष्णव हम क्योंकर न अपनी तिनखासी भक्तिके अभिमानमें निमग्न हो । वाहरे कलि तेरी माहिमा ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

न चाहकर) परम वैदिक अलौकिक धर्म जो भगवदेकशेषता है उसका अवलंबन करके द्वयार्थका सदाचिंतन करता रहै एवं रूपेण जीवकी उपायशून्यतोपासनाको देख भगवत् स्वयं ही उसे परमधामकी कृपा करदेते हैं ।

यथा ' सर्वधर्मान् परित्यज्य' यहां धर्म प्राप्तव्यसकलफलका जो भगवत्में समर्पण है उसमेंही सर्वधर्मपरित्यागका तात्पर्य है, कुछ धर्मके स्वरूपेण परित्यागमें तात्पर्य नहीं एवं उपायशून्यतापदकाभी अकामकर्मानुष्ठानार्जितज्ञानभक्तिसे परिपूर्ण होकरभी उनके दर्प तथा विश्वाससे शून्यतामें ही तात्पर्य है कि भक्त्यादिके स्वरूपेण परित्यागमें अन्यथा मादृश पामर ही परमधामको पधारते । गीतामें भी कहाहै—' यतन्तोप्यकृतात्मानो नैनं पश्यन्त्यऽचेतसः 'अर्थात् अचेतसः अकृतात्मानः भक्त्यादिके लेशसे प्रमादको प्राप्त हुये पुरुष मेरी प्राप्तिके लिये यत्न करतेहुए भी मुझे प्राप्त नहीं होसकते इस वाक्यसे भगवत् उपायशून्यताभावनाकी अपेक्षाको व्यंजित करते हैं । तथा—

' सर्वकर्माण्यपि सदा कुर्वाणो मद्व्यपाश्रयः ।
मत्प्रसादादवाप्नोति शाश्वतं पदमव्ययम् ॥ '

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अर्थात् सकलकर्मोंको भगवद्भजनार्चनादिको करता हुआ भी पुरुष मेरेही प्रसाद (कृपा) से परमधामको पाताहै न तु उन अनुष्ठितभक्त्यादिसे। जब भगवत्प्रसादसेही जीव परमधामको पाताहै तब भक्त्याद्युपायों पर विश्वास करना व्यर्थ है, ऐसी दशामें दर्पकी तो कौन पूछे। इससे भी उपायशून्यता भावनाकी अपेक्षा ही प्रतीत होती है। इसी उपायशून्यताको श्रीयामुनाचार्यस्वामीने भी स्पष्ट कहाहै·

'न धर्मनिष्ठोस्मि न चात्मवेदी न भक्तिमांस्त्वच्चरणारविन्दे। अकिंचनोनन्यगतिः शरण्यं त्वत्पादमूलं शरणं प्रपद्ये॥'

अर्थात् हे भगवन् जो शास्त्रमें संसारसागरोत्तारहेतु धर्मादिक कहेहैं उनमेंसे एकभी मेरे हृदयकोशमें नहीं एवं ऐसा उपायशून्य अत एव अकिंचन अत एव अनन्यगति आपके शरण्य श्रीचरणकी शरण आयाहूं। यहांपर धर्मशब्द कर्मकलापपर है। शंका है कि, हे मुनिवर आप तो तत्त्ववेत्ता आचार्यप्रवर हो इससे कर्मनिष्ठ न होनेसे भी आपकी हानि नहीं क्योंकि आप तो तत्त्वज्ञानसे ही तरजाओगे, इस शंकासे आचार्य कहतेहैं कि

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

'न चात्मवेदी' । अस्तु, आप तो परमभागवत ह आपकी दृष्टिमें तो तत्त्वज्ञानभी तुच्छ पदार्थ हैं और आत्मज्ञानी न होनेसेभी आपकी हानि नहीं, क्योंकि भागवत होनेसे आप अवश्य भक्त होंगे तब तो आप भक्तिसेंहो तरजायँगे इस शंकासे आचार्यप्रवर कहतेहैं कि 'न भक्तिमांस्त्वच्चरणारविन्दे' इससे यहां पर 'त्वच्चरणारविन्दे' आचार्य व्यंजित करते हैं कि, हे भगवन् आपके श्रीचरणमें ही भक्ति नहीं है लौकिक विषयोंमें तो मेरी भक्ति (रति) ही है । एवं इस पद्यसे श्रीमदाचार्यकीउपायशून्यताभावना परि पूर्णरूपसे व्यक्त होती है ॥

५ अथ परतंत्रता ।

ममताऽहंता लेशहूं, त्याग भक्तपदसेव ।
साध साधु परतंत्रता, जन्म सुफल करलेव ८।

लोकवेदसाधारण स्पष्ट है कि, जो नाम जीव तथा जड पदार्थ हैं वह सब भगवत्के अधीन हैं तथा च सिद्ध हुआ कि, जीव भगवत्परतंत्र है इस हेतु भगवत्परतंत्रताकाभी सदा अनुसंधान करना चाहिये । एवं जो पदार्थ पिताका होताहै उसके पुत्रोंका होताही है । यहां पर यह शंका न करनी कि, यों तो माता भी जैसी अपने पिताकी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वैसीही अपनीभी होनीचाहिये क्योंकि मातामें भी पिता पुत्रके संबंधमात्रका भेद है सत्त्वमें भेद नहीं। यथा—एक ही स्त्री अपने भर्ताकी पत्नीत्वेन पदार्थ है और पुत्रकी मातृत्वेन पदार्थ है तब तो यदि पदार्थमात्र भगवत्का है तो भागवतोंकाभी हैही क्योंकि भागवतही भगवत्के पुत्र हैं। अपने दास भागवतोंमें स्वपुत्रत्वानुसंधानकी न्यूनता (अल्पता) न हो इसी हेतु भगवत्ने श्रीलक्ष्मीसे वैकुंठमें अपना औरस पुत्र उत्पन्न नहीं किया, एवं रीत्या वैष्णवको भागवतपरतंत्रताकाभी अवश्य सदा अनुसंधान करतेरहना चाहिये। इसीको परतंत्रता कहते हैं।

तथा च तन मन धनसे भागवतोंकी सेवा करनी चाहिये क्योंकि भगवत्स्वसेवापेक्षयाभी भागवतसेवासे अधिक प्रसन्न होते हैं। श्रीसांप्रदायिकशिष्टाचारप्रमासेभी भगवत्सेवापेक्षया भागवतसेवा अधिक अभ्यर्ह है और 'भगवत्भागवताचार्य सेवा' परंपराप्राप्त इस वाक्यमें भी उत्तरोत्तर सारकथनरीत्या भगवत्सेवासे

---

१ आज कल्हके हमारेसे लाल बुझक्कड तो भागवतोंको छोड आचार्यको भी घोडेकी तरह लगाम डाल स्वाधीन करनेमेंही पुरुषार्थ समझते हैं आप चाहें जितनी धूल उडाएं उसका कुछ ध्यान नहीं दूसरेका जरासाभी दोष देख उसे राखकी चुटकीही बताने लगते हैं। वाहरी वैष्णवता।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भागवतसेवा और भागवतसेवासेभी आचार्यसेवा प्रशस्त है, कोई कोई महानुभाव तो आचार्यसेवासेभी भागवतसेवाको प्रशस्त कहते हैं । और भगवत्भागवताचार्यसेवा फलानुसंधानसे नहीं करनी किंतु केवल भगवन्मुखोल्लासार्थही करनी चाहिये । क्योंकि फलानुसंधानपूर्वक करनेसे यथाकथंचित् अनुसंहित फलही प्राप्त होगा भगवत्कृपारूप अपूर्व फल प्राप्त न होगा फलाननुसंधानपूर्वक करनेसे तो भगवत्कृपा होगी उससे सब फल स्वयंही सिद्ध होजाते हैं ।

'देवर्षीणां च नारदः' "अनन्तश्चास्मि नागानाम्" "प्रह्लादश्चास्मि दैत्यानाम्" इत्यादि प्रमाणोंसे भी प्रकट है कि, भागवत भगवत्के स्वरूपही हैं ।

"ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति ।
भ्रामयन् सर्वभूतानि यंत्रारूढानि मायया ॥"
"भीषाऽस्माद्वातः पवते भीषोदेति सूर्यः ।"
"भीषाऽस्मादग्निश्चेन्द्रश्च मृत्युर्धावति पञ्चमः ॥"

इत्यादि प्रमाणोंसे भगवत्परतंत्रताभी प्रकट है भागवतसेवार्थ स्वयं भगवत्नेही कहाहै—

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

"सतां प्रसङ्गान्मम वीर्यसंविदो भवन्ति हृत्कर्णरसायनाः कथाः। तज्जोषणादाश्वपवर्गवर्त्मनि श्रद्धा रतिर्भक्तिरनुक्रमिष्यति १॥

अर्थात् सत्पुरुष जो भागवत हैं उनका संग होनेसे मेरी (भगवत्की कथा हृदय और कानोंको रसायन सुखप्रद प्रतीत होनेलगतीहै उन्हीं भागवतोंके जोषण सेवासे मोक्षमार्ग (वैष्णवधर्म) में श्रद्धा रति और भक्ति उत्पन्न होतीहै।

"निमज्जोन्मज्जतां घोरे भवाब्धौ परमायनम्। सन्तो ब्रह्मविदः शान्ता नौर्दृढैर्वाप्सु मज्जताम्॥"

अर्थात् अगाधसंसारसागरमें डूबतेहुए जीवोंके लिए भागवतही दृढ नौका हैं। भागवतही संसारसागरसे पार करसकतेहैं।

इसी भागवतसेवा तथा भागवतपरतंत्रताके अभिप्रायसे श्रीयामुनाचार्यस्वामीने भी कहाहै-

'सकृत्त्वदाकारविलोकनाशया तृणीकृतानुत्तमभुक्तिमुक्तिभिः। महात्मभिर्मामवलोक्यतां नय क्षणोपि ते यदिरहोतिदुःसहः॥'

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

अर्थात् हे भगवन् ! जिन महानुभावोंको आपका एकक्षणभरभी विरह असह्य है और आपके आकार-स्वरूप किंवा अर्चाविग्रहके एकवारके भी अवलोकनकी आशामात्रपरही जो ब्रह्मलोकपर्यंतके उपभोगको और तो क्या मोक्षकोभी तृणवत् तुच्छ जान न्यौछावर कर-देतेहैं उन महानुभावोंकी मैं सेवा करूं किंवा उनका सत्संग मुझे प्राप्त हो इतना तो मेरा भाग्य कहां तथापि उन महापुरुष भागवतोंके कृपाकटाक्षका कृपाकर एक-वार पात्र तो मुझे बनाओ ।

एवं भगवत्से तथा आचार्यप्रवरोंसेभी जिन भागव-तोंकी कीर्ति गानकी जानी है उन भागवतोंकी सेवा

---

१ आज कल्ह तो यदि भागवतः स्वयंभी अपने पास चलकर आते हैं तो भी मादृश मदांध जीवोंको भागवतोंसे मिलनेकोभी अव-काश नहीं मिलता क्यों न हो पूरे भाग्यवान् जो ठहरे यह शंका न करनी कि, अब वैसे भागवतही नहीं हैं क्योंकि भागवत तो वैसे ही हैं आपकी ही दृष्टिमें रोग उत्पन्न होगया है जो आपको भाग-वत बुरे प्रतीत होतेहैं । यथा-कामलरोग होनेसे श्वेतभी शंख पीला प्रतीत होताहै । और प्रथम कालमें जैसेही सेवा करनेवाले मुक्ता-रूप थे वैसेही उनके भोक्ता भागवतभी हंस थे । अब यदि भागवत हंस नहीं तो आप सेवा करनेवाले भी तो मुक्ता नहीं हो नीमकेही फल न हो फिर क्यों भागवतोंसे ग्लानि करते हो बाहरे धन ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तथा अधीनताको कौन है, नेत्रोंवाला जो स्वीकार न करेगा॥

६ अथ अप्राकृतता।

प्राकृत देह विभिन्न हौं, ज्ञानानन्दनिधान।
रामभोग्यता शेषता, अप्राकृतता जान ॥९॥

मैं प्राकृतदेहसे भिन्न हूं और ज्ञान तथा आनन्दस्वरूप हूं इत्यादिक जीवस्वरूप ज्ञान होकर जो अपने आपमें भगवत्की भोग्यता तथा शेषताका ज्ञान (भावना) है उसेही अप्राकृतता कहतेहैं। कहाभी है-

"प्राकृतानि शरीराणि देहरूपाणि यः पुमान्।
आत्मरूपमिति स्मृत्वा वर्तते प्राकृतो हि सः॥"

अर्थात् जो जीव प्राकृतदेहकोही आत्मा मानताहै वह प्राकृत है। तथा-

'प्राकृताकारमात्मानं ज्ञानाकारतया पुनः।
स्वतंत्रोहमिति ज्ञानमेतत् प्राकृतलक्षणम्॥

अर्थात् प्राकृताकारदेहकोही जो आत्मा मानताहै और देहकोही ज्ञानवान् अनुभविता मानताहै और अपने आपको स्वतंत्र मानताहै वह जीव प्राकृतही है। यह जीव भगवत्का दास होनेसे भगवत्का शेष और भोग्य

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कहाताहै कहाभी है ' ज्ञानानन्दमयो ह्यात्मा शेषोहि परमात्मनः ' अर्थात् ज्ञानानन्दस्वरूप जो जीव है वह परमात्माका शेष है । भगवद्भोग्यताभावनाकी दृढतासे ही तो मीरांबाईने जीवगोस्वामीसे कहदिआथा कि, पुरुष तो एक नंदनंदन है और तो सब स्त्री हैं ।इस अप्राकृतताका सांख्ययोगमें सविस्तर वर्णन है । भगवत्ने स्वयंही कहा है--ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः ।' इति ॥

७ अथ ऐकांतिकता ।

हरि उपाय उपेय मम, ऐकांतिकता मान ।
मिल्यौ रहै भव ना मिलै, पंकजपत्रसमान १० ॥

यथा कमलपत्र जलमें डूबाहुआ भी जलसे भीगता नहीं एवं प्रारब्धवश प्राप्त संसारका निर्वाह करताहुआ भी जीव सदा संसारसे पृथक् रहै और हृदयको भगवत्पदारविंदमें ही लगाए हुए उपेय-प्राप्तव्य जो भगवत् है उसकी प्राप्तिके लिये उपाय भी वही भगवत् है, भगवत्के सिवाय और कोईभी उपायसे भगवत् प्राप्त नहीं होसकते यह जो भावना है इसे ही ऐकांतिकता कहते हैं । इसी ऐकांतिकतापर श्रुतिभी है-

' नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो न मेधया

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

बहुना श्रुतेन। यमेवैष वृणुते तेन लभ्यस्त-स्यैष आत्मा विवृणुते तनुं स्वाम्॥'

अर्थात् भगवत् अध्ययन ज्ञान तथा शास्त्रसे भी प्राप्त नहीं होसकते किंतु जिसी पर ये भगवत् कृपा करते हैं उसीको प्राप्त हो सकते हैं और उसीको (स्व-कृपापात्रको) ही अपना स्वरूप दरशाते हैं। अन्यत्र भी कहा है-

'देहबन्धुसमाजोयं मुमुक्षोः संसृताविह।
वैदेह्या इव लङ्कायामेककण्यादिसंगमः॥'

अर्थात् यथा लंकामें राक्षसियोंका समागम श्रीमती जानकीको सर्वथा उद्वेगकारी ही था एवं भागवतोंकोभी संसारमें देहबांधवादि संयोग उद्वेगकारी ही होता है। तथापि यथा श्रीजानकीमहाराणीने मारुतिमुखसे श्रीरामचंद्रमहाराजका अचल प्रेम जान लंकानिवास-दुःखको तिरस्कृत करके श्रीरामचंद्रमहाराजकी प्राप्ति-की आशापर श्रीरामचंद्रके ही गुणगानसे समय व्य-तीत करादिया, एवं वैष्णवको भी भगवत्प्राप्तिकी आशापर आचार्यसे प्राप्त जो मंत्र उसीके अर्थानुसंधान-से संसारका समय यापन करना चाहिये। आचार्यकी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.

पूर्ण कृपा होगी तो अवश्य ही भगवत् प्राप्त होंगे । भगवत्प्राप्तिमें विशेष हेतु होनेकेही कारण शास्त्रने आचार्यकी प्रशंसा गाई है ।

'पंकजपत्रसमान' यह जो कहा है इसी भावको गीतामें भी कहा है—

'नैव किंचित्करोमीति युक्तो मन्येत तत्त्ववित् । पश्यन् शृण्वन् स्पृशन् जिघ्रन्नश्नन् गच्छन् स्वपंन् श्वसन् ॥ ब्रह्मण्याधाय कर्माणि संगं त्यक्त्वा करोति यः । लिप्यते न स पापेन पद्मपत्रमिवाम्भसा ॥

अर्थात् तत्त्ववेत्ता सांसारिक कार्यको करताहुआ भी यही जाने कि मैं कुछ नहीं करता और कर्ममात्रके फलको भगवदर्पण करके आसक्तिको परित्याग कर जो महात्मा कर्म करता है वह कमलपत्रकी तरह दैवात् हुए हुए पापसे भी लिप्त नहीं होता । तथा—

'जानामि धर्मं न च मे प्रवृत्तिर्जानाम्यधर्मं न च मे निवृत्तिः । केनापि देवेन हृदि स्थितेन यथा नियुक्तोस्मि तथा करोमि ॥'

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.

यद्यपि मैं स्वरूपेण धर्मको जानताहूं तथापि मैं जो धर्म करताहूं वह मेरी प्रवृत्ति नहीं, अधर्मकोभी जानताहूं अधर्मसे जो मैं निवृत्त हूं वह निवृत्ति मेरी ओरसे नहीं हृदयस्थ नारायण जैसे कराताहै वैसे मैं करताहूं अर्थात् धर्ममें प्रवृत्त करनेवालाभी नारायण है अधर्मसे निवृत्त करनेवालाभी नारायण है मेरी कुछ सामार्थ्य (करामात) नहीं। भगवत्ने स्वयं भी कहाहै-

'ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।
भ्रामयन् सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया॥'

इसी ऐकांतिकताको पुष्ट करनेके लिये अर्जुनसे भगवत्ने कहाहै-

'तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत। तत्प्र-

---

१ यह पद्य एक अद्वैती महानुभावका है आज कल्ह तो उलटीही रीति है कि, धर्मादि सत्कार्यमें दैवात् जो अल्पसी प्रवृत्ति है उसे तो मूछपर हाथ फेरकर अपनी करामात बताते हैं, और अहर्निश जो पापमें प्रवृत्ति है उस दोषको दैव बेचारेके माथे मलतेहैं। दोषने ऐसाही विलक्षण कर्म किया है जो उसको कोईभी अंगीकार नहीं करता अनादिकालसे रंडुआ है अत एव गुप्तरीतिसे सबको प्रायः भोगता है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सादात् परां शान्तिं स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतम् ॥'

अर्थात् हे भारत ! सर्वभावकरके नाम भगवत्कोही उपेय तथा उपाय मानके उसी भगवत्की शरण जा (मेरी शरण आ) उसी मुझ भगवत्के प्रसाद (कृपा) से परमशांति तथा परमधामको तू प्राप्त होगा । इसी ऐकांतिकताके अभिप्रायसे श्रीयामुनाचार्यस्वामीने भी कहा है--

'अपराधसहस्रभाजनं पातितं भीमभवार्णवोदरे । अगतिं शरणागतं हरे कृपया केवलमात्मसात् कुरु ॥'

अर्थात् हे हरे भगवन् ! मैं तो अनंत अपराधोंका भरा पात्र हूं और अगाधसंसारसागरमें डूबरहाहूं और अगति हूं नाम आपको प्राप्त होने योग्य मेरे पास

---

१ इस ऐकांतिकताका मार्ग दिखाकर भगवत्ने तो परमधामको बाजारके बेरोंसेभी सुलभ करदिया परंतु प्रारब्धदोषके मारे अहंता ममताके रोगियोंसे वह ऐकांतिकताभी संपादन करनी काठिन होगई ह वास्तवमें देखा जाय तो ऐकांतिकतामें एक पैसेकाभी व्यय नहीं न शरीरकोही कुछ आयास है ! इसीसे कुलशेखराल्वारने कहाहै--'अहो जनानां व्यसनानि मोक्षे' ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कोईभी उपाय नहीं आप अपनी कृपामात्रसेही स्वीकार करो, अर्थात् आपकी प्राप्तिमें मेरे आपही उपाय हैं ॥

८ अथ नित्यरंगिता ।

नित्यरंगिता भावना, अंतर्यामी राम । वसय हृदय इह जानिवो, परिहर चारित जु वाम११

वामचारित्र जो पाप हैं उनका परित्याग करके श्रीनारायणअंतर्यामिरूपसे मेरे हृदयकमलमें सदा विराजमान हैं इस भावनाको नित्यरंगिता कहते हैं भगवत्का हृदयकमलमें विराजना लोकवेदमें प्रसिद्ध है,गीतामेंभी कहाहै- 'ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति' श्रुतिभी कहतीहै-'अथ यदिदमस्मिन् ब्रह्मपुरे दहरं पुण्डरीकं वेश्म दहरोस्मिन्नन्तर आकाशस्तस्मिन् यदन्तस्तदन्वेष्टव्यं तद्वाव विजिज्ञासितव्यम्' अर्थात् शरीरके भीतर हृदयकमलरूपी वेश्ममें रहनेवाला जो श्रीनारायण परंब्रह्म है उसीको खोजना चाहिये क्योंकि वही ज्ञातव्य पदार्थ है।

जो जीव पापचरित्रका परित्याग नहीं करते उनके हृदयमें वसकरभी भगवत् कभी प्रगट नहीं होते कहाभी है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

'रागादिदूषिते चित्ते न तिष्ठेन्मधुसूदनः ।
न बध्नाति रतिं हंसः कदाचित् कर्दमाम्भसि॥'

अर्थात् जैसे पंकमिले जलमें हंस निवास नहीं करता तैसे रागद्वेषादिदोषदूषित चित्तमें श्रीनारायणभी वास नहीं करते । तथा

'हरति परधनं निहन्ति जन्तून् वदति तथा-
नृतनिष्ठुरादयश्च । अशुभजनितदुर्मदस्य
पुंसः कलुषमतेर्हृदि तस्य नास्त्यनन्तः ॥'

अर्थात् जो परधनको हरताहै जीवोंकी हिंसा करता है (जीवोंको दुःख देताहै) वाणीसे मिथ्या और कठोर संभाषण करताहै और पूर्वकृतपापसे जो दुरभिमानी है ऐसे कलुषितमतिपुरुषके हृदयमें कभी भगवत् प्रकट नहीं होते तथा च इन लक्षणोंसे जानना चाहिये कि मादृशजंतुओंके हृदयमें भगवत् हैही नहीं । इस समय तो विपरीत ही होरहाहै क्यों कि मादृशजीव अपने हृदयमें भगवत्के निवासको दुर्मदादि असल्लक्षण असद्धेतुओंसेही व्यंजित करतेहैं । क्यों न हो छोटे छोटे राजाओंके संग-सेही अभिमानकोटि गगनतक पहुँचजातीहै क्या कथा फिर उस महानुभावके अभिमानकी जिसके हृदयमें अखिलभुवननायक' श्रीपतिनारायण आविराजे तथा-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

'के शवाः पुरुषा लोके येषां हृदि न केशवः। केशवार्पितसर्वाङ्गा न शवा न पुनर्भवाः॥'

प्रश्न–लोकमें शव-प्राणहीन कौन हैं? उत्तर जिनके हृदयमें केशव नहीं है। जिनने तन मन धन सब श्रीकेशवके अर्पण करदियाहै वे तो शवभी नहीं न वे फिर संसारकोही प्राप्त होतेहैं किंतु परमधामको चले जातेहैं।

"विमलमतिरमत्सरः प्रशान्तः शुभचरिताखिलसत्त्वमित्रभूतः। प्रियहितवचनोऽस्तमानमायो वसति सदा हृदि तस्य वासुदेवः॥"

अर्थात् शुद्ध बुद्धिवाला स्पर्धारहित अत एव शांत तथा धर्माचरण करनेवाला जीवमात्रपर दया रखनेवाला हित और मधुर बोलनेवाला मान और कपटसे रहित ऐसा जो पुरुष है उसके हृदयमें भगवान् वास करते हैं। न कि कपटदर्पादिदूषित हृदयमें। जिस कपटदर्पादिदोषदूषितके साथ सांसारिक जीव भी व्यवहार करना नहीं चाहते उसके हृदयमें अखिलभुवननायक

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्रीपति श्रीनारायण वास करें और प्रकट हों यह कब संभव होसकताहै ॥

९ अथ परमैकांतिकता ।

निखिलदेवको छांडिके, हरिपद एक मनाउ । द्वयमंत्रार्थविचारवो, गुरुचरनन चित लाउ ॥ १२ ॥ काया परमशुभार्थकी, हतिकर इति चित वोय । भीति मानि तासों बहुरि विषयवासना खोय ॥ १३ ॥ हरिजनसंगम हर्ष हो, विछुडन दुःख अपार । निजकृत भक्ति उपायता, जो विश्वास विसार ॥ १४ ॥ रामकृपा विश्वास इक, इति मन निश्चय ठान । परमैकांतिकको सदा, इहिविध चरित सुजान ॥ १५ ॥

चाहेभी कैसा दुःख प्राप्त हो उसकी निवृत्तिके लिये किंवा प्रयोजनांतरके लिये भी देवतांतराराधनमें कभी प्रवृत्ति न हो । देवतांतरमें रागपरित्यागके साथ द्वेषपरित्यागभी आवश्यक है । श्रीनारायणाराधनभी कोई

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

लौकिक वा पारमार्थिक प्रयोजनके लिये न हो किंतु भगवदाराधन जीवका मुख्य कर्तव्य है इस बुद्धिसे भगवन्मुखोल्लासमात्रके लिये हो।

और भगवत्ने मुझे कृपाकर श्रीमदाचार्यके चरणोंमें पहुंचादिआ है अब मुझे भवरोगकी औषध पूछनी चाहिये इस रीतिसे संसारदुःखसे आतुर होकर आचार्यसे मंत्र पूछे तदनंतर आचार्यके बताये मंत्रके अर्थका सदा अनुसंधान करना उस द्वयार्थानुसंधानकोही अपना आजीवन समझना।

सदा श्रीमदाचार्यके चरणोंका ध्यान करना आचार्यभक्तिका निवाहना तन मन धन सब अपने आचार्यके समर्पण करना। यथा गरुड सर्प विषका निवारक है एवं स्वाचार्यको संसारविषका निवारक समझना। आचार्यके विना कोईभी संसारसागरसे पार नहीं करसकता चाहेभी जैसी भगवद्भक्ति पूर्ण हो यदि आचार्यकी कृपा नहीं किंवा आचार्यका कोप है तो किसी प्रकारभी जीव संसारसागरसे पार नहीं होसकता, प्रत्युत अनिष्ट ही होताहै।

और शरीरमें आत्मभ्रांतिजनकतया अहंता ममता जन्मस्थानतया पुरुषार्थविरोधि विषयोंमें भोग्यताबुद्धि जनकतया स्वरूपहानिकारकतया शरीरसे राक्षसवत्

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भय मानना । क्यों कि उक्तोपद्रव शरीरसंबंधसेही होतेहैं । एवं शरीरसे भय मानकर सकल विषयवासना खोदेना । क्योंकि जब तक विषयवासना नष्ट नहीं होती तब तक शरीरसंबंधभी दूर नहीं होसकता विषयवासनानिवृत्तिके लिये आचार्योपासनाही एक औषधि है यह जान स्वाचार्यकी भक्ति करना ।

और भगवद्भक्तोंके मिलनेसे परम हर्ष होना उनके वियोगसे परम दुःख होना । कहाभी है 'इक विछुरत दारुण दुख देहीं ।' जो नूतन भक्तलोग भगवद्भक्तोंकोभी संसारपक्षमें गिनकर उनकी उपेक्षा करतेहैं तथा उनके समागमसे सुख उनके वियोगसे दुःख नहीं मानते उनकी भक्ति गजस्नानवत् व्यर्थ है । इनही सूक्ष्म विषयोंके ज्ञानार्थ शास्त्र तथा महानुभावसत्संगकी अपेक्षा आवश्यक है। जो दूधके उफानतुल्य भक्तिके आवेग (जोश) से कहदेते हैं कि, हमें सत्संग तथा शास्त्रकी कुछ अपेक्षा नहीं वे सर्वथा उभयभ्रष्ट मूर्ख हैं । उनके इस कथनको ऐसा समझना चाहिये यथा कोई फकीर गांजेके नशेमें कहदेवे कि हमें निधिकी कुछ गरज नहीं। वास्तवमें देखाजाय तो सत्संग तथा शास्त्रको सज्जन मात्र चाहतेहैं किंतु चाहनेपरभी उनको प्राप्त होतेहैं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जिनने पूर्व जन्ममें अंजुल भर भर; मोतियोंका दान किआहो यथा मिथ्याभाषण स्वरूपेण पाप होकरभी परोपकारार्थ कियाहुआ पापपक्षनिक्षिप्त नहीं होता एवं भगवद्भक्तभी देहित्वेन संसारी होकरभी भक्तत्वेन संसारपक्षनिक्षिप्त नहीं होते किंतु भगवत्के प्रतिबिंबही माने जाते हैं।

और अपनी जो भगवत्में भक्ति है उसपर 'उपायताका विश्वास न करना अर्थात् संसारसागरको तरनेके लिये हमारी भक्तिही उपाय है इस विश्वासको सर्वात्मना छोडदेना। भगवद्भक्ति तो जीवका मुख्य कर्तव्य है इसहेतु कर्तव्यत्वेन भक्ति करे। और एक भगवत्कृपामात्रपर विश्वास रखना अर्थात् मैं तो कुछ योग्य नहीं हूं प्रत्युत नरकयातनायोग्यही हूं संसारसे तो भगवतही अपनी निर्हेतुककृपासे उद्धार करेगा ऐसा विश्वास करना इसको परमैकांतिकता कहतेहैं। इसी परमैकांतिकताके अभिप्रायसे भगवत्ने कहाहै—

'अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते। तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्॥'

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अर्थात् भगवत् कहते हैं—जो मेरे भक्त अनन्य होकर मेरी उपासना चिंतना करते हैं उनको मैं परमधाममें बुलालेताहूं और फिर संसारमें नहीं भेजता, यही योग-क्षेमपदार्थ है । योग-परमधामप्राप्ति, क्षेम—अपुनरावृत्ति प्राप्त परधामका वियोग न होना । इसी परमैकांतिकतापर श्रीयामुनाचार्यस्वामीने भी कहा है 'धनं मदीयं तव पादपङ्कजं कदा नु साक्षात् करवाणि चक्षुषा' अर्थात् हे भगवन् ! मेरा धन तो आपका श्रीचरणही है ।

'तव दास्यसुखैकसङ्गिनां भवनेष्वस्त्वपि कीटजन्म मे । इतरावसथेषु मास्मभूदपि मे जन्म चतुर्मुखात्मना ॥ '

अर्थात् हे भगवन् आपके दासोंके घरमें यदि मैं कीट होकर भी जन्मूं तो वह कीटजन्म भी मुझे स्वीकार है किंतु जो आपके दास नहीं उनके घर तो कमलासन होकरभी जन्मना मुझे स्वीकार नहीं । भाषामेंभी—कहा-है—'काहूके बल कर्मको काहूके आचार । व्यास भरोसे कुँवरके सोबत पाउँ पसार ॥' 'पतित उधारन नमवा सुन कर तोर । अधम करमकी विरिआँ वासि मन मोर॥' सूर सुघडता नैन धारि लौह सिलाई ताय।भामिनि भोगिनि

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पान जिन जीवनपयानिकराय ॥ परमैकांती बननेको प्रथम पंचसंस्कारोंकीभी अत्यंत अपेक्षा है ॥ कहाभी है-

'तापः पुण्ड्रस्तथा नाम मन्त्रो यागश्च पञ्चमः । अमी ते पञ्चसंस्काराः परमैकान्तिहेतवः ॥'

अर्थात् शंखचक्रमुद्रा तप्त धारण करना ऊर्ध्वपुंड्र लगाना भगवत्संबंधी नाम धारण करना मंत्र लेना और याग ये पांच संस्कार परमैकांतिकताके हेतु हैं । इन पंचसंस्कारोंको आचार्यही करसकता है इन्हीं पांच संस्कारोंको करनेसे करनेवाला आचार्य कहाता है ।

परमैकांतिकको अनन्य होकर एक श्रीनारायणकीही उपासना करनीचाहिये अन्यथा परमैकांतिकता सिद्ध नहीं होसकती । अनेक देवताकी उपासना करनेवाला दोघरके पाहुनेकी तरह तथा दो नावमें पैर रखनेवालेकी तरह हानिको प्राप्त होता है, यथा धोबीका कुत्ता घरका न घाटका एवं अनेक देवताकी उपासनावाला उभय भ्रष्ट होजाता है कहाभी है-'अति यजेत निजां यदि देवतामुभयत-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्रयवते जुषतेप्यघम् ' इस हेतु एक ही देवताकी उपासना करनी चाहिये ।

यहां विचारणीय है कि, किस देवताकी उपासना करनी चाहिये । तथा च चारों पुरुषार्थोंमेंसे मोक्ष ही परमपुरुषार्थ है वह मोक्ष तो श्रीनारायणके ही अधीन है कहाभी है 'मुक्तिमिच्छेज्जनार्दनात्' इसलिये नारायणकीही उपासना करनी चाहिये । और सांसारिक विषयोंके लिये तो देवतोपासनाकी विशेष अपेक्षाभी नहीं क्योंकि वे यथा प्रारब्ध प्राप्त होते ही हैं प्रारब्धसे जो प्राप्त नहीं हो सकता ऐसा तो मोक्षही पदार्थ है इसहेतु मोक्षप्रद श्रीनारायणकीही उपासना करनी चाहिये । और वेदशास्त्रको विचारकर देखा जाय तो श्रीनारायणसे बडा देव कोई भी नहीं उपासना तो सबसे बडे भी देवकी करनी चाहिये इसलियेभी नारायणकी उपासना करनीचाहिये पामरलोगभी आचमन मार्जनादि विष्णुशब्दसेही करते हैं चंद्रमाको मामा बताते हैं इत्यादि पामरव्यवहारोंसेभी श्रीनारायणकीही श्रेष्ठता प्रतीत होती है । पामर लोगभी श्रीरामकोही परमेश्वर बताते हैं । संप्रदायभी जितने हैं उनमें बहुतकर नारा-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यणपरायणही संप्रदाय हैं यथा वैष्णव संप्रदाय तो नारायणपरायण हई है, स्मार्तसंप्रदायभी नारायणोपासनासे विरुद्ध नहीं यद्यपि आज कल्हके अद्वैती शैव होगये हैं तथापि अद्वैतसंप्रदायभी नारायणोपासनापरही है। श्रीशंकरस्वामीकी विष्णुभक्ति सबको प्रकट है आज कल्हके अद्वैती अपनी संप्रदायको जानते नहीं इसीसे शिवोपासक होगये हैं शिक्खमत दादूपंथ कबीरपंथ इत्यादि नूतनपंथभी नारायणोपासनापरही हैं क्योंकि इन लोगोंनेभी श्रीरामभक्तिको ही निभाया तथा गाया है। वास्तवमें देखाजाय तो सिक्खादिमतभी अद्वैतरीतिसे श्रीनारायणोपासनाकोही बतानेवाले हैं, आज कल्ह आचारभ्रष्ट होगये हैं यह तो कालिका प्रभावही है अन्यदेतत् नारायणोपासनाकेही अभिप्रायसे गीताके अंतमें सार-कहा है "सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज" इति औरभी कोईने कहा है-"माता च कमला देवी पिता देवो जनार्दनः" इत्यादि सब प्रमाण तथा युक्तियोंसे यही सिद्ध होता है कि, एक श्रीनारायणकीही अनन्य होकर उपासना करनी चाहिये। श्रीयामुनाचार्यस्वामीनेभी कहा है-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

'स्वाभाविकानवधिकातिशयेशितृत्वं
नारायण त्वयि न मृष्यति वैदिकःकः ।
ब्रह्मा शिवः शतमखः परमस्वराडि-
त्येतेपि यस्य महिमार्णवविप्रुषस्ते ॥

अर्थात् हे नारायण ! कौन है वह वैदिक जो आपमें स्वाभाविक अनवधिक तथा अतिशयित ईशताको नहीं मानता क्योंकि ब्रह्मा शिव इंद्र तथा नित्यमुक्त ये सब भी आपके महत्त्वसमुद्रके किणके हैं । श्रुतिभी कहती है 'नारायणः परं ब्रह्म तत्त्वं नारायणः परः' इति । अर्थात् सबसे परतत्त्व श्रीनारायणही है । और हृदयके नेत्र खोलकर देखाजाय तो उपासना शब्द श्रीनारायणोपासनापरही चरितार्थ होता है और उपासनायें तो उपासनाभास हैं । इससे सिद्ध हुआ कि,श्रीनारायणकीही उपासना करनी चाहिये सोई कहा--'निखिलदेवको छांडिकै हरिपद एक मनाउ ' इति ॥

ऐकांतिककी अपेक्षा परमैकांतिकका यही भेद है कि, परमैकांतिकको देहादिसंसारसे भय बहुत होताहै और सर्वस्व आचार्यके अर्पण करके स्वयं आचार्यके अधीन होकर आयुकालको व्यतीत करता है। तथा च-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ऐकांतिक संसारसौं, हुइ भयभीत हुं जोय।
ह्वै अधीन गुरुके रहै, परमैकांतिकहोय ॥१६॥

१० अथ संबंधज्ञानस्वरूपता ।

संबंधज्ञानसुरूपता, भगवत् परम दयाल ।
आत्मा सकलपदार्थको, अरु दाससको पाल१७

जो नाम पदार्थ है वह सब भगवत्का शरीर भूत है और भगवत् पदार्थमात्रका शरीरी–आत्मा अंतर्यामी है श्रुतिभी कहतीहै 'यस्य पृथिवी शरीरम्' 'यस्यात्मा शरीरम्' इत्यादि ।

और इस समग्र प्रपंचका भगवत् ही उपादानकारण तथा निमित्त कारण है सृष्टिकालमें भगवत् ही प्रपंच-रूपेण परिणत होजाताहै यही ब्रह्मपरिणामवाद श्रीसं-प्रदायका सिद्धांत है तथा उपपन्न भी है कहा भी है–

'नराज्जातानि तत्वानि नाराणीति विदुर्बुधाः ।
तस्य तान्ययनं पूर्वं तेन नारायणः स्मृतः ॥'

अर्थात् यह जो २५ तत्त्व हैं (पंच भूत पंच तन्मात्रा दश इंद्रियें मन बुद्धि अहंकार प्रकृति और जीव) वे सब नर जो भगवत् है उससे उत्पन्न हुएहैं अतएव वे नार कहाते हैं उन नार नामक तत्त्वोंमें व्यापकत्वेन

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

निवास करनेसे भगवत्का नारायण यह नाम है यद्यपि पच्चीसवां तत्त्व जीव नित्य है इससे जीवकी वास्तविक उत्पत्ति उपपन्न नहीं तथापि महाप्रलयमें बद्ध जीव भगवत्में लीन होजातेहैं और सर्गावस्थामें भगवत्सेही प्रकट होतेहैं इस प्रकटताके ही अभिप्रायसे भगवत्से जीवकी उत्पत्ति कही जातीहै वास्तवमें देखाजाय तो घटादिकार्य भी अपने कारण मृत्तिकादिमें सदा विद्यमानही प्रकट होतेहैं कुछ मृत्तिकामें न होनेवाले घटकी मृत्तिकासे प्रकटता नहीं हो सकती अन्यथा तंतुसेभी घट उत्पन्न होजाय क्योंकि यथा तंतुमें घट नहीं तथा मृत्तिकामें भी नहीं फिर मृत्तिकासेही घट उत्पन्न हो तंतुसे न हो यह नियम नहीं बनसकता इससे अगत्या मानना पडेगा कि, मृत्तिकामें विद्यमान ही घट करण व्यापारसे प्रकट होताहै तब तो यथा मृत्तिकासे प्रकट होनेवाली भी घटकी मृत्तिकासे उत्पत्ति कहीजाती है एवं भगवत्से प्रकट होनेवालेही जीवकी भगवत्से उत्पत्ति कहनी कुछ अयुक्त नहीं भगवत्ने कहाभीहै–

'मत्तः परतरं नान्यत् किंचिदस्ति धनञ्जय ।
मयि सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा इव ॥ पुरुषः स परः पार्थ भक्त्या लभ्यस्त्वनन्यया ।
यस्यान्तःस्थानि भूतानि येन सर्वमिदं ततम् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सर्वभूतानि कौन्तेय प्रकृतिं यान्ति मामिकाम्
कल्पक्षये पुनस्तानि कल्पादौ विसृजाम्यहम्॥'

भगवत् कहते हैं हे अर्जुन! मुझसे पर कोई पदार्थ नहीं जैसे मणि डोरेमें पोई होतीहै एवं यह समग्र प्रपंच मेरेमें स्थिर है। मैं जो परमपुरुष हूं उसीमें सब यह पदार्थ मात्र स्थित हैं उसी मुझसे यह सब प्रपंच व्याप्त है और कल्पक्षय-महाप्रलयमें समग्र भूत मुझमें लीन होजाते हैं सर्गारंभमें मैं उन सब भूतोंकी रचना करता हूं। इससे सिद्ध हुआ कि, सर्गादिमें जीवभी भगवत्से प्रकट होता है। और भगवत् अंशी है जीव भगवत्का अंश है उस अंशभूत जीवका अपने अंशी श्रीनारायणमें लीन होना तथा सर्गारंभमें उससे प्रकट होना युक्तही है अयुक्त नहीं औरभी कोईने कहाहै-

'त्वं माता सर्वभूतानां देवि देवो हरिः पिता। त्वया च विष्णुना देवि जगद् व्याप्तं चराऽचरम्॥'

अर्थात् हे लक्ष्मि! तूही समग्रभूतोंकी माता है नारायणही पिता है समग्र चराचर प्रपंच तुझसे और नारायणसे व्याप्त है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भगवत् परमदयालु और निजदासोंका रक्षक है । कहाभी है ।

'परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे ॥ '

भगवत् कहतेहैं भक्तोंकी रक्षाके लिए भक्तोंको जो दुःख देतेहैं उनको नष्ट करनेके लिए मैं सदा अवतार धारण करताहूं । यथा उन्मत्तभी पुत्रको माता पिता छोड नहीं सकते प्रत्युत उसका पालनही करते हैं एवं भगवत्भी अपने भक्तोंका पालनही करताहै भगवत्ने कहाभी है–

'कौन्तेय प्रतिजानीहि न मे भक्तः प्रणश्यति ॥
मां हि पार्थ व्यपाश्रित्य येपि स्युः पाप-
योनयः । स्त्रियो वैश्यास्तथाशूद्रास्तेपि
यान्ति परां गतिम् ॥ किं पुनर्ब्राह्मणाः
पुण्या भक्ता राजर्षयस्तथा ॥ '

भगवत् कहतेहैं हे अर्जुन ! निश्चय जान कि मेरा भक्त हानिको प्राप्त नहीं होता किंतु उसकी भक्ति बढ-तीही रहेगी । हे अर्जुन ! जो हीन जातिलोगभी मेरीशरण आतेहैं वे चाहे स्त्री हों चाहे वैश्य हों चाहे शूद्र हों तोभी परमगतिको पातेहैं तब भक्त और पुण्यचरित्र शरणा-गत ब्राह्मण तथा क्षत्रियोंकी परमगतिमें संदेहही क्या

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

है। भगवत्की परमकृपालुताको श्रीयामुनाचार्यस्वामीनेभी कहाहै-" एवं निसर्गसुहृदि त्वयि सर्वजन्तोः स्वामिन्न चित्रमिदमाश्रितवत्सलत्वम् " हे भगवन्! आपमें भक्तवत्सलता है यह कुछ आश्चर्यकी बात नहीं क्योंकि आप स्वभावसेही जीवमात्रके सुहृद हैं। तथा-

"वशी वदान्यो गुणवानृजुः शुचिर्मृदुर्दयालुर्मधुरः स्थिरः समः। कृती कृतज्ञस्त्वमसि स्वभावतः समस्तकल्याणगुणामृतोदधिः॥"

अर्थात् हे भगवन्! आप दयालु मधुर, शुद्ध, गुणवान्, ऋजु, कृती, तथा कृतज्ञ हैं और कहांतक कहूं आप स्वभावसेही समस्तसद्गुणरूपी अमृतके समुद्र हैं। तथा-

"त्वदंघ्रिमुद्दिश्य कदापि केनचिद् यथा तथा वापि सकृत्कृतोञ्जलिः। तदैव मुष्णात्यशुभान्यशेषतः शुभानि पुष्णाति न जातु हीयते॥"

अर्थात् हे भगवन्! आपके श्रीचरणके उद्देश्यसे यदि कोईभी भूलचूक करभी जैसे कैसे एकवारभी प्रणाममात्रभी करताहै तो वह उसी समय समग्रपापोंसे रहित

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

होकर प्रत्युत पुण्यका निधि होजाताहै और वह कभी भी हानिको प्राप्त नहीं होता किंतु मोक्षसोपानपर पैर रखदेताहै ।

तथा च भगवत्की परमदयालुता दासरक्षकता और सर्वशरीरिता (सर्वात्मता) विषयक जो ज्ञान उस ज्ञानकी जो उपासना है उसेही संबंधज्ञानस्वरूपता कहतेहैं। मैं दास हूं भगवत् स्वामी हैं मैं पाल्य हूं भगवत् पालक हैं मैं शरीर हूं भगवत् मेरे शरीरी (आत्मा) हैं इत्याकारक जो संबंध उसकी ज्ञानस्वरूपता ज्ञानसंपत्ति यही संबंधज्ञानस्वरूपता पदार्थ है ॥

११ अथ शेषभूतता ।

हरिसों नातो जानिवो, शेषीशेष निदेश ।
शेषभूतता वरनिहैं, आचारज नागेश ॥ १८ ॥

भगवत्का और जीवका अनादिकालसे लेकर शेषशेषिभाव (स्वस्वामिभाव) संबंध है अर्थात् जीव शेष (दास) है भगवत् शेषी (स्वामी) हैं इसी भावनाको नागेश जो श्रीरामानुजस्वामी हैं वे शेषभूतता कहतेहैं। शेषीशेषनिदेश--शेषशेषिभावसंज्ञक ।

भगवतनेभी सकलपदार्थको स्वशेष कहाहै-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

'हन्त ते कथयिष्यामि दिव्या ह्यात्मविभूतयः।' 'नान्तोस्ति मम दिव्यानां विभूतीनां परंतप।'

यहांपर विभूतिशब्द शेषताकाही वाचक है इसीलिये इन श्लोकोंके भाष्यमें श्रीरामानुजस्वामीने विभूतिशब्दका अर्थ नियाम्यत्व कियाहै-" विभूतित्वं नाम नियाम्यत्वम् " जो पदार्थ नियाम्य होताहै वह अर्थात्ही शेष होताहै। इसी। शेषभूततापर श्रीयामुनाचार्यस्वामीनेभी कहाहै-

'न देहं न प्राणान् न च सुखमशेषाभिलषितं नचात्मानं नान्यत् किमपि तव शेषत्वविभवात्। बहिर्भूतं नाथ क्षणमपि सहे यातु शतधा विनाशं तत्सत्यं मधुमथन विज्ञापनमिदम्॥'

अर्थात् हे मधुमथन भगवन् आपकी शेषतासे रहित जो पदार्थ हैं मैं उसे क्षणभरभी सहन नहीं करसकता वह चाहे देह हो चाहे प्राण हो चाहे सकलाभिलषित सुख हो किंवा अशेष और अभिलषित जो सुख वह हो चाहे मेरा आत्मा हो चाहे अन्यत् पुत्र कलत्रादिक

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हो, 'नाथ क्षणमपि' यहां पक्षांतरमें अथ न क्षणमपि आपकी शेषतासे रहित उत्सवकोभी मैं नहीं सहसकता, किंतु आपकी शेषतासे रहित मदीय जो नाम पदार्थ है वह सब सौ सौ टुकडे होकर नष्ट होजाय मेरे इस विज्ञापन प्रार्थनाको सत्य करो क्योंकि आप तो मधुराक्षसकोभी मथन करने वाले हैं अत एव आपकी शेषतासे रहित मदीयपदार्थको नष्ट करदेना आपको कुछ कठिन नहीं । इस पद्यमें 'तदिदं मे सत्यं विज्ञापनम्' इस अन्वयकी अपेक्षा कुरुपदका अध्याहार करके 'तदिदं मे विज्ञापनं सत्यं कुरु' ऐसा अन्वय करना मुझे ललित प्रतीत होता है जब कि पदार्थमात्र भगवत्का शेष है तब जीव भी भगवत्का शेष है इसहेतु शेषभूतताकी उपासना आवश्यक है ॥

१२ अथ शेषवृत्तिपरता ।

शेषवृत्तिपरता लहौ, अपनो करतब मान ।
सेवे धन मन कायसों, भक्तन अरु भगवान ॥ १९ ॥

अपना कर्त्तव्य मानकर अत एव निर्हेतुक जो तन मन धनसे भगवत् तथा भागवतोंकी सेवा करना है इसेही शेषवृत्तिपरता कहते हैं । कहाभी है-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

'यथा हि स्कन्धशाखानां तरोर्मूलावसचे-
नम्। एवमाराधनं विष्णोः सर्वेषामात्मनश्च
हि॥'

अर्थात् यथा वृक्षके एक मूलको जल देनेसे पत्र पत्रको जल पहुंच जाता है एवं एक नारायणकी सेवासे सबकी सेवा होजाती है।

'सुखसेव्यः सुखाराध्यो जगदीशः सुखप्रदः।
हरिरेको न संदेहः सर्वशास्त्रेषु संमतः॥'

अर्थात् सकलशास्त्रोंका यही सिद्धांत है कि, अनन्य होकर भगवत्सेवा करनी चाहिये। भागवतसेवा रहित स्वसेवासे भगवत् कभी प्रसन्न नहीं होते इसलिये भगवत्सेवापेक्षया भी भागवतसेवा अत्यंत अपेक्षित है। यहां पर श्रीरामानुजस्वामीने यही लिखाभी है कि 'भागवतकैङ्कर्यपर्यन्तं भगवत्कैङ्कर्यं स्वस्य भोग्यं यथा भवति तथा तिष्ठति' तथा—'एवं विधं भगवत्कैङ्कर्यं भागवतकैङ्कर्यपर्यंतं न चेत् पूर्णत्वं न याति' अर्थात् भागवतसेवा विना भगवत्सेवा पूर्णताको नहीं प्राप्त होती यथा दक्षिणा विना दान पूर्ण नहीं होता। शास्त्रमें भी कहा है-

'अर्चयन्तोपि गोविन्दं तदीयान्नार्चयन्ति

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ये । न ते विष्णोः प्रसादस्य भाजना दाम्भिका जनाः ॥'

अर्थात् जो भगवत्की सेवा करनेवालेभी भागवतोंकी सेवा नहीं करते वे भगवत्प्रसादके पात्र नहीं बन सकते प्रत्युत उन लोकोंको दंभी कहना चाहिये। न्यायप्राप्तभी है कि, पुत्रकी सेवा न करनेसे पिता अपनी हजार सेवा-सेभी प्रसन्न नहीं होता पुत्रकी सेवा करनेसे अपनी थोडी सेवासेभी अधिक प्रसन्न होजाताहै ।

'बलिभिश्चोपचारैश्चनृत्यगीतादिभिस्तथा। नित्यमाराध्यमानोपि ततो विष्णुर्न तुष्यति ॥ तस्माद्विष्णुप्रसादाय वैष्णवान् परितोषयेत् । प्रसादसुमुखो विष्णुस्तेनैव स्यान्न संशयः ॥'

अथात् विविधप्रकारकी सेवासे सेव्यमानभी भगवान् विष्णु वैष्णवसेवा विना प्रसन्न नहीं होते इसहेतु वैष्णवोंकी सेवा अवश्यही करनी चाहिये वैष्णवसेवाहीसे भवान् विष्णु प्रसन्न होते हैं। इस हेतु भगवत्सेवा तथा भागवतसेवा तनमनधनसे करनी चाहिये ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हर एक वेशधारीको कुछ न कुछ कर्तव्य अवश्य है यथा नटोंको नाटकादि और तो क्या प्रपंचमात्रको मिथ्या माननेवाले तथा आत्माकोही ब्रह्म माननेवाले अद्वैतियोंकी संप्रदायमेंभी संन्यासवेशधारीकोभी ब्रह्मभावनादि अवश्य कर्तव्य है तब तो जिसने भगवद्दासताका वेश धाराहै उसेभी दास्य कार्य अवश्य कर्तव्य है और भगवद्भागवताचार्यसेवाही दास्यकार्य है उसके करनेसेही दासता सिद्ध होती है उसके न करनेसे दासताभी सिद्ध नहीं होती कहाभी है-

'कृते तु दासकृत्ये तु दासानां कृतकृत्यता।
अकृते दासकृत्ये तु दास्यमेव न सिध्यति॥'

अर्थात् दासकृत्य जो भगवद्भागवताचार्यसेवा है उसके करनेसेही दासोंकी-वैष्णवोंकी कृत्यकृत्यता है उसके न करनेसे दासताही सिद्ध नहीं होती।

और दासता मेरा स्वरूप है यह ज्ञान होनेसे शेषवृत्ति नाम भगवद्भागवताचार्यसेवामें पुरुषार्थता प्रतीत होती है तब उस शेषवृत्तिके अनुष्ठा-

---

१ अविचारणीय आचार्यस्वरूपका विचार करनेवाले आजकलहके लायकसरताज शिष्योंको इस श्लोकपरभी ध्यान देना चाहिये जो उनको अपने स्वरूपकी भी कदाचित् कुछ कलई खुलजाय।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नसे शेषवृत्तिपरता सिद्ध होती है । जब दासताको किसी फलका साधन मानाजाय तब तो शेषवृत्तिही नहीं सिद्ध होती क्योंकि फलसाधनमें सबको लाघवकी अपेक्षा रहतीहै जब शेषता (दासता) कोही फलसाधन मानलिआ तब शेषवृत्तितक चित्तवृत्ति ही न जायगी शेषताकी अपेक्षा शेषवृत्तिको फलसाधन माननेमें गौरव है शेषताको फलसाधन माननेमें लाघव है । विशिष्टाभावे विशेषणाभावन्यायेन यथा घट सिद्ध न होनेसे घटरूपभी सिद्ध नहीं होता एवं शेषवृत्तिके न होनेसे शेषत्वभी सिद्ध न होगा और वह शेषताही तो जीवका स्वरूप है तब तो उस शेषताके न होनेसे जीवका स्वरूपही मानों नष्ट होगया । यहां यह शंका न करनी कि, जब जीव नित्य है तब उसका स्वरूप क्यों कर नष्ट होगा, क्योंकि यथा राजस्वरूप जो ऐश्वर्य है उसके नष्ट होजानेसे विद्यमानभी राजाको लोग नष्ट बताने लगतेहैं क्योंकि राजाका वास्तविक स्वरूप ऐश्वर्य है वह नष्ट होगयाहै एवं जीवका जो वास्तविक स्वरूप है शेषता उसके न होनेसे विद्यमानभी जीवका स्वरूप अभावग्रस्त कहासकताहै । इसहेतु शेषता (दासता) को किसीभी फलका साधन नहीं मानना

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

चाहिये किंतु अपना स्वरूपही मानना चाहिये तब तो भगवत्कृपासे सब कुछ सिद्ध होजाताहै । कहाभी है ।

' स्याज्जीवनेच्छा यदि ते स्वसत्तायां स्पृहा यदि । आत्मदास्यं हरेः स्वाम्यं स्वभावं सदा स्मर ॥'

यदि जीवको अपने जीवन तथा सत्ताकी इच्छा हो तो वह स्वाभाविक जो अपनी दासता तथा भगवत्की स्वामिता है उसे सदा स्मरण करता रहै अपनी दासताके विना उक्तरीतिसे जीवकी सत्ता नाम स्वरूपही सिद्ध नहीं होसकता जब जीवका स्वरूपही सिद्ध नहीं हुआ तब जीवन कहां अर्थात् भगवद्दासता विना जीवका जीवनही व्यर्थ है तथा-

" परमात्मा हरिः स्वामी स्वमहं तस्य किङ्करः । कैङ्कर्यमाखिला वृत्तिरिति संचिंतयेत्सदा ॥ "

अर्थात् श्रीनारायण मेरा स्वामी है मैं उस' श्रीनारायणका किंकर हूं भगवद्भागवतकैंकर्यही मेरा कर्तव्य है जीवनोपाय है यह वैष्णवको सदा चिंतन करते रहना चाहिये ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१३ अथ नित्यशूरता ।

नित्यशूरता तब बनै, जो निज इंद्रियग्राम।
लोक विषय विषसौं रुकै, जुरै रामपद धाम ॥ २० ॥

वाक् (बोलनेवाली जीभ) पाणि पाद पायु उपस्थ (हस्त, पैर, गुदा, पुरुषका लिंग, स्त्रीकी भग,) ये पांच कर्मेंद्रिय हैं । श्रोत्र त्वक् चक्षु रसना घ्राण (कान, त्वचा, नेत्र, स्वाद लेनेवाली जीभ, नाक,) ये पांच ज्ञानेंद्रिय हैं। मन इन दशही इंद्रियोंका सरदार इंद्रिय है इन इंद्रियोंको लौकिक विषयरूपी विषसे रोकके जो भगवत्में लगाना है यथा–वाणीसे भगवन्नामस्मरण करना, हाथोंसे सेवा करना, पैरसे मंदिरको जाना मंदिरकी परिक्रमा करनी, गुदा और उपस्थकी शुद्धिके बिना जीव भगवत्सेवायोग्य नहीं होता इससे उनका शुद्ध करना स्वशुद्धिद्वाराही गुदा और उपस्थको भगवत्सेवामें कारणता है, श्रोत्रसे भगवत् कथा सुननी शरीर पर भगवत्प्रसादी चंदनका लेप करना भगवत्प्रसादी माला पहिरनी यही त्वक्से सेवा है, नेत्रोंसे भगवत्के

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दिव्यमंगलरूपको निहारना, रसनासे भगवत्तीर्थप्रसादका आस्वाद लेना, घ्राणसे भगवत्प्रसादी तुलसीपुष्पोंको सूंघना, चित्तसे भगवत्का स्मरण करना, तथा मनसे भगवत्के सेवा प्रभृतिका मनन करना, अहंकारसे भगवत्कोंही अपना समझना, अपनेको भगवत्का समझना, बुद्धिसे भगवच्चरणशरणका निश्चय करना, इसीको नित्यशूरता कहते हैं। श्रीकुलशेखराल्वारने इस नित्यशूरतापर बहुत कुछ कहाहै यथा-

जिह्वे कीर्तय केशवं मुररिपुं चेतो भज श्रीधरं पाणिद्वन्द्व समर्चयाच्युतकथां श्रोत्रद्वय त्वं शृणु। कृष्णं लोकय लोचनद्वय हरेर्गच्छांघ्रियुग्मालयं, जिघ्र घ्राण मुकुन्दपादतुलसीं मूर्धन्नमाऽधोक्षजम् ॥

---

१ लुट्टां लुटिआं इह जग उह दिन अब ना हत्थीआवें।
भाग बुरे इन नैनादे जो तपती उमर बितावें ॥ १ ॥
कैसी सूरत कैसी मूरत कैसी बोलन उसदी।
सोच सोचके घुटिए जीविच जान दमादम खुसदी ॥ २ ॥
उझक उझक कर मुखडे देखे उद्यम बहुत बनाया।
इन नैनाने नागरनटदा रूप किते ना पाया ॥ ३ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अर्थात् हे जिह्वे तू केशवका कीर्तन कर, हे चित्त तू मुरारिपुका स्मरण कर, हे हस्तद्वय तू भी श्रीधरकी अर्चा कर, हे श्रोत्रद्वय तू अच्युतकथा सुन, हे नेत्रद्वय तू श्रीकृष्णचंद्रको निहार, हे पादद्वय तू हरिमंदिरको चल, हे नासिके तू भगवत्प्रसादी तुलसीको सूंघ, हे सिर ! तू भगवत्के आगे निमजा (साष्टांगकर) । तथा

'आनन्द गोविन्द मुकुन्द राम नारायणानन्त निरामयेति । वक्तुं समर्थोऽपि न वक्ति कश्चिदहो जनानां व्यसनानि मोक्षे ॥'

अर्थात् भगवन्नामस्मरणमात्रसे मोक्ष प्राप्त होसकताहै और राम नारायण इत्यादि भगवन्नामके उच्चारणमें लोक समर्थ भी हैं तो भी नहीं उच्चारण करते देखो मोक्षकी ओरसे लोक कैसे निर्भाग्य हैं । तथा–

'इदं शरीरं परिणामपेशलं पतत्यवश्यं श्लथसन्धिजर्जरम् । किमौषधैः क्लिश्यसि मूढ दुर्मते निरामयं रामरसायनं पिब ॥ अयाच्यमक्रेयमयातयाममपाच्यमक्षय्यमदुर्भरं मे । अस्त्येव पाथेयमितः प्रयाणे श्रीकृष्णनामामृतभागधेयम् ॥'

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अर्थात् हे मूढ ! यह शरीर अवश्यही एक दिन गिरनेवाला है फिर औषधसेवनका क्यों श्रम उठाताहै निरामयकरनेवाला जो श्रीरामनामरूपी रसायन है उसे पी। वह श्रीरामनाम ऐसा है कि, जिसके लिये किसीसे याचनाकाभी काम नहीं, जिसे मोल लेनेकीभी अपेक्षा नहीं, जो न बासी होताहै, जो न पकाना पडताहै, जिसका क्षय भी नहीं होता, जो उठाने भी अशक्य नहीं, वही श्रीरामनामरूप अमृत ही परलोकमें काम देनेवाला है, और तो सब यहां ही रहजाता है।

आप श्रीकुलशेखराल्वार इस नित्यशूरतोपासनामें बडे शूर थे आप श्रीरामभक्त थे सदा श्रीरंगनाथके दर्शनको श्रीरंगनगरमें जानेकी तयारी होती थी किंतु श्रीरामचंद्रमहाराजके उत्सवोंसे एकवारभी इतनाभी अवकाश न मिला जो श्रीरंगनगर तक जाते। आप दक्षिणकी चोलपुरीके राजा थे उस समय आपका राज्य बडा विशाल था आज कल दक्षिणमें वही आपका विशालराज्य संकुचित होकर रामराजाके नामसे प्रसिद्ध है। इस नित्यशूरताके लिये भगवान्नेभी कहाहै-

'मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु।
मामेवैष्यसि युक्त्वैवमात्मानं मत्परायणः॥'

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अर्थात् हे अर्जुन ! मेरेमें चित्तको लगा मेरा भक्त बन मेरी अर्चा कर मुझे साष्टांग नमन कर मत्परायण हो ऐसा करनेसे तू मुझको प्राप्त होजायगा । वैष्णव लोगोंको इस कालमें इस नित्यशूरताको ही सबसे बढकर योग समझना चाहिये यदि कुछ भलाईकी संभावना होसकती है तो इसी नित्यशूरतो पासनासे होसकती है ।

१४ अथ मुमुक्षुता ।

मोक्षधामकी चाहना, कहि मुमुक्षुता शेष ।
श्रीपतिसेवामहँ सदा, प्रतिबंधक भववेष ॥२१॥

भववेष जो संसारवेश—संसारसंबंध है यह भगवत्सेवामें अनेकप्रकारसे प्रतिबंधक है यथा--बाल्यावस्थामें तो सेवाकी सामर्थ्य ही नहीं होती, कुमारावस्था विशेषतः तो प्रमादमें कोई भाग्यवान्की अध्ययनादिमें व्यतीत होजाती है युवावस्थामें तो मदांध्यका ठिकानाही नहीं रहता, वृद्धावस्था तो खटियापर ही बीतती है, दिन संसारिक कार्योंमें बीतजाताहै, रात्रि सोनेमेंही समाप्त होजाती है । कदाचित् सौभाग्यवश किसी महानुभावके उपदेशसे भगवद्भागवतसेवाकी कुछ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सूझीभी तो भी अनेक प्रतिबंधक तयार हैं यथा-धनाभाव शरीरमें सामर्थ्य न होनी, मनका विषयोंमें खचित होना, शरीरमें रोगादिका होना जनन मरणके अशौच इत्यादि। इसहेतु संसारसंबन्धरूपीप्रतिबंधककी निवृत्ति विना भगवत्सेवा निर्विघ्न नहीं होसकती और श्रीवैकुंठमें तो भगवत्सेवामें प्रतिबंधका नाम भी नहीं इस हेतु जो मोक्षधामकी चाह है उसे शेष-श्रीरामानुजस्वामी मुमुक्षुता कहते हैं मुमुक्षुता इस शब्दका मुमुक्षाही अर्थ है। संसारकी दुःखमयता कही भी है-'संसारसागरं घोरमनन्तक्लेशभाजनम्'। 'संसारसागरे घोरे विषयग्राहसंकुले। अपारे दुस्तरेऽगाधे पतितं कर्मभिः स्वकैः॥"

एवं सर्वात्मना दुःखमय संसार अवश्य हेय है किंतु स्वयं निवर्त्तनीय भी नहीं व्योंकि संसारहानि शरीरपरित्याग तो आत्महत्यारूप पाप है तब तो संसारमें मुमुक्षुकी वह दशा कहनी चाहिये यथा मरुदेशके मध्याह्नार्कसंतप्तासिकतामें व्याकुल कोई एकपर्वतके समीप छाया देख उसके नीचे गया वहां कुछ विश्राम पाकर ऊपर देखा तो जाना कि, यह छाया एक बडे नागके फणकी है तब तो वह घबरागया उस नागफणकी छायामें बैठनेकाभी साहस नहीं और अंगारस-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मान संतप्त सिकतामें भी इधर उधर एक पैरभी बढनेका साहस नहीं, एवं भागवत मुमुक्षुको भी न तो संसारसंबंध सह्यही होताहै और न उसका परित्यागही किए बनता है इस हेतु अधिकतम खिन्नता होजाती है।

ऐसी अवस्थामें मुमुक्षुलोग आचार्यचरणका विश्वास तथा सामीप्य ग्रहणकर द्वयानुसंधान करते हुए भगवत्की भेजी मृत्युकी प्रतीक्षा करने लगते हैं कहाभी है-

'कृतकृत्याः प्रतीक्षन्ते मृत्युं प्रियमिवातिथिम् ।
प्रायेण पापकारित्वान्मृत्योरुद्विजते जनः ॥'

अर्थात् कृतकृत्य नाम जो भगवत्शरणागत्यादिक जीवको अवश्य कर्त्तव्य हैं वे जिनने करलिये हैं ऐसे लोग (महानुभाव) प्रियअतिथिके सदृश मृत्युकी प्रतीक्षा करते हैं, जो लोग कृतकृत्य नहीं हैं किंतु पापकारी हैं वे तो पापका फल नरक है मरनेसे नरक होगा इसहेतु मृत्युसे डरते हैं। जिन महानुभावोंको परमधाममें पधारना है वे मृत्युसे क्यों डरेंगे क्योंकि राज्यसिंहासनप्राप्तिके लिये यदि कोई द्वीपांतरमें भेजा जाय तो वह द्वीपांतर जानेमें कभी नहीं डरेगा।

यद्यपि मुमुक्षुताको वैष्णवोंकी तरह अवैष्णव लोग-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भी मानते हैं तथापि वैष्णवोंकी और अवैष्णवोंकी मुमुक्षुतामें बहुत भेद है। अवैष्णवोंकी ऐसी मुमुक्षुता है यथा कोई उसीका राज्य खोसनेको उस राजाकी सेवा करे क्योंकि वे लोग 'आत्मा च ब्रह्म' इस रीतिसे आत्माको ही ब्रह्म मानते हैं किंतु आत्मामें विद्यमानभी ब्रह्मत्वका अविद्यावशसे अनुभव नहीं होता ऐसा कहते हैं और अविद्यानिवृत्ति होकर मोक्षावस्थामें आत्मामें ब्रह्मत्वानुभव होनेके लिये ही मुमुक्षु होना मानते हैं विना मोक्षके अविद्याकी निवृत्ति नहीं होती आत्मामें ब्रह्मत्वानुभव तब होगा जब ब्रह्मज्ञान होगा ब्रह्मज्ञान भी ब्रह्मजिज्ञासाके अधीन है ब्रह्मजिज्ञासा तब होगी जब मुमुक्षा होगी तब तो सिद्ध हुआ कि, अवैष्णवोंकी मुमुक्षुता ब्रह्म बननेके ही लिये है। आत्मामें ब्रह्मत्वानुभव संसारमें भी होसकता है इसीलिये वह जीवन्मुक्ति भी मानते हैं। मुमुक्षा शमदमादिसंपत्ति इत्यादि ब्रह्मजिज्ञासा साधनोंके प्रति और ब्रह्मजिज्ञासाके प्रति यागादि तथा भगवदाराधनादिको वे लोग साधन मानते हैं तब तो ज्ञात हुआ कि, उन लोगोंको भगवदाराधनादि भगवत् बननेके ही लिये है कुछ वैष्णवोंकी तरह कर्तव्यत्वेन नहीं। एवं उनकी मुमुक्षुताभी परंपरया ब्रह्म बननेके ही लिये है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वैष्णवलोगोंकी तो मुमुक्षुता कुछ ब्रह्म बननेके ही लिये नहीं क्यों कि, हजार भी उपायसे लोहा सुवर्ण नहीं बनसकता, एवं जब कि, जीव पदार्थ भिन्न है और ब्रह्म-पदार्थ भिन्न है तब किसी उपायसे भी जीवात्मा ब्रह्म नहीं बनसकता अन्यथा लोहाभी सुवर्ण बनजाय, यहभी शंका मत करनी कि, यथा पारसस्पर्शसे लोहाभी सुवर्ण बनजाता है एवं ब्रह्मज्ञानसे जीव ब्रह्म बनसकता है, क्योंकि पारसस्पर्शसे लोहा सुवर्ण सदृश बनजाता है कुछ वही सुवर्ण नहीं बनजाता अन्यथा पारसस्पर्शसे लोहा सुवर्ण न बनकर विद्यमा-नसुवर्णमें लीनही होय एवं ब्रह्मज्ञानसे जीवका ब्रह्मस-दृश होना तो हमकोभी स्वीकृत हीहै । यथा किसी कालमेंभी राजा और भृत्य एक छोड तुल्यभी नहीं होसकते एवं जीव और ब्रह्मभी एक नहीं होसकते जीव सदा दासही है ब्रह्म सदा स्वामीही है तब ऐक्य वा तुल्यता कैसे होगा जो मोक्षावस्थामें जीवकी ब्रह्मसदृ-शता वैष्णवलोग मानते हैं वहभी कोई कोई अंशमें यदि सर्वात्मना ब्रह्मसदृशता होजाय तो मुक्त जीवों-काभी संसारसर्गसंहारादिमें अधिकार होजाय सो तो अवैष्णवोंकोभी संमत नहीं है इसीसे कहते हैं कि वस्तु-गत्या जीव ब्रह्मसदृशभी नहीं होसकता ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अतएव जीवन्मुक्तिभी उपपन्न नहीं होसकती क्योंकि, जीवन्मुक्ति नाम है सांसारिक शरीरसहितकी मुक्तिका और सुखदुःखका जो अत्यंताभाव उसेही वे मुक्ति बताते हैं तब तो सांसारिकशरीरसहितके सुखदुःखोंका जो अत्यंताभाव वही जीवन्मुक्तिपदार्थ हुआ। श्रुति तो कहती है-'न ह वै सशरीरस्य प्रियाऽप्रिययोरुपहतिरस्ति' अर्थात् सांसारिकशरीरवालेके सुखदुःखोंका अत्यंताभाव कभी नहीं होसकता। तथा च उक्त श्रुतिप्रमाणसे संसारमें सशरीरके सुखदुःखोंका अत्यंताभाव न होनेसे जीवन्मुक्तिमें कोई उपपत्ति तथा प्रमाण नहीं। प्रत्यक्षका तो यह विषयहीं नहीं प्रत्यक्षप्रमाण तो अवैष्णवमतके प्रत्युत प्रतिकूल ही है। यदि कहो कि, प्रपंचमात्र मिथ्या होनेसे तदंतर्गत सुखःदुख भी मिथ्या है उन मिथ्याभूत सुखदुःखोंका अत्यंताभाव संभव होनेसे सशरीरकी मुक्ति,(जीवन्मुक्ति संभव है,। यहांपर प्रथम तो प्रपंचमात्र मिथ्या है इसमें ही कुछ प्रमाण नहीं और स्वयं मिथ्याभूत प्रमाण प्रपंचको मिथ्या नहीं बनासकते। यहभी मत कहो कि, मिथ्याभूत प्रमाणोंसे मिथ्याभूत प्रपंचका मिथ्या होना कुछ कठिन नहीं क्योंकि, एक तो मिथ्याको मिथ्या बनानेसे पिष्टपेषण

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दोष लगेगा द्वितीय साध्यापेक्षया साधकको निवर्त्यापेक्षया निवर्त्तको दृढ अवश्य होना चाहिये तभी एकको एक शत्रु पराजित करता है इस हेतु प्रमाणको सत्य होनाही चाहिये ।

द्वितीय यदि सुखदुःख मिथ्या हैं तब सभीके सुखदुःख मिथ्या हैं एवं जीवमात्रको जीवन्मुक्त कहना चाहिये वह न कहकर कोई कोईको जीवन्मुक्त क्यों बताते हो ? ।

यदि कहो कि, जिसने अपने सुखदुःखोंको मिथ्या मानाहै उसेही जीवन्मुक्त बताते हैं तो पदार्थकी व्यवस्था स्वरूपाधीन है कुछ ज्ञानाधीन नहीं यथा अग्निको हजार शीत समझकरभी स्पर्श करोगे तोभी वह शीत न प्रतीत होगा प्रत्युत दाहही करेगा, एवं सब जो सुखदुःख हैं वे मिथ्या माननेसे कभी मिथ्या नहीं होसकते तथा च वास्तविक सुखदुःखोंका संसारमें अत्यंताभाव (निवृत्ति) न होनेसे जीवन्मुक्ति असंभव है ।

वैष्णवलोग तो संसारमें अनेक प्रतिबंधोंके कारण भगवत्सेवा यथावत् हो नहीं सकती इसलिये परमधाममें प्रभु श्रीनारायणकी दासभावसे निर्विघ्न सेवा करनेके लियेही मोक्ष चाहतेहैं कुछ ब्रह्म बननेको नहीं इन्हीं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हेतुओंसे अवैष्णवोंकी मुमुक्षुतासे वैष्णवोंकी मुमुक्षुता कुछ और प्रकारकी है। वैष्णवोंका और अवैष्णवोंका मोक्षमेंभी बहुत भेद है अवैष्णवलोग आत्माको व्यापक मानते हैं अतएव स्थूल सूक्ष्म कारणशरीरोंकी निवृत्तिसे मोक्ष होजाती है मुक्त किसी वैकुंठादि धाममें नहीं जाता व्यापक आत्माका जाना आना बने नहीं यह अवैष्णव कहते हैं। वैष्णव तो श्रीवैकुंठ प्राप्तिकोही मोक्ष कहते हैं और यही मत उपपन्नभी है भगवान्नेभी कहाहै—'यद्गत्वा न निवर्त्तन्ते तद्धाम परमं मम।'

एवं अवैष्णव तथा वैष्णवोंका भक्तिमें भी बहुत भेद है क्योंकि, अवैष्णवलोग तो उक्तरीतिसे ब्रह्म बननेके लिये ही भक्ति करते हैं। और इनकी भक्ति श्रद्धा-लक्षणाभक्ति है। और वैष्णवलोग तो स्वयं ब्रह्म बनने को भक्ति नहीं करते किंतु अपना स्वरूप समझकर भक्ति करते हैं अर्थात् जीवका स्वरूप है कि, भक्ति करे और वैष्णवोंकी भक्ति प्रेमलक्षणा भक्ति है। और तो क्या वैष्णवोंके और अवैष्णवोंके ब्रह्ममें भी भेद है क्योंकि, वैष्णवलोग तो ब्रह्मको सविशेष अनंत कल्याणगुणगणविशिष्ट मानते हैं। अवैष्णव तो ब्रह्मको निर्विशेष मानते हैं और उस निर्विशेषब्रह्ममें प्रमाण कुछ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नहीं यदि प्रमाण होगा तो सप्रमाणस्वरूपविशेषसे ही ब्रह्म सविशेष होजायगा तब वैष्णवलोग निष्प्रमाणक निर्विशेष ब्रह्मको क्यों कर मानें । इन बातोंपर बडे बडे वादग्रंथ बने हैं यहां पर विस्तरभयसे और अप्रस्तुत होनेसे यह सब सविस्तर नहीं लिखा । और आज कल वष्णवलोगोंको इन बातोंकी कुछ अपेक्षा भी नहीं उनकी दृष्टिमें सभी धान बारह पसेरी ही तुलता है ।

१५ अथ अवाधिगोचरता ।

अवधिगोचरता कहौं, काम्यकर्मको त्याग । मुक्तिहेतु हरिकी कृपा, जो इह दृढ चित लाग ॥ २२ ॥

नित्यनैमित्तिककर्मके परित्यागका तो, शास्त्रमें दोष लिखाहै यथा—

'आचारहीनं न पुनन्ति वेदाः' 'श्रुतिः स्मृतिर्ममैवाज्ञा यस्तामुल्लंघ्य वर्तते आज्ञाच्छेदी मम द्रोही मद्भक्तोपि न वैष्णवः॥'

भगवान् कहते हैं श्रुति और स्मृति मेरीही आज्ञा हैं जो उनका उल्लंघन करताहै उनको नहीं मानता वह

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मेरी आज्ञाका छेदन करनेवाला है अतएव वह मेरा द्रोही है और श्रुतिस्मृतिको न माननेवाला मेरा भक्तभी वैष्णव नहीं कहा सकता। क्योंकि, विष्णुका जो दास हो वह वैष्णव कहाताहै और दासको तो प्रभुकी आज्ञा अविचारेण मंतव्य है तब जिसने विष्णुकी आज्ञारूपी श्रुतिस्मृतिको नहीं माना वह वैष्णव कैसे कहासकेगा। तथा-

'न चलतिनिजवर्णधर्मतो यः सममतिरात्मसुहृद्विपक्षपक्षे। न हरति न च हन्ति किंचिदुच्चैः सितमनसं तमवेहि विष्णुभक्तम्॥'

अर्थात् जो अपने वर्णाश्रमधर्मको छोडता नहीं मित्र शत्रुपक्षमें समदृष्टि है पराई वस्तुको हरता नहीं किसीकी भी हानि करता नहीं और हृदयसे शुद्ध है उसे विष्णुभक्त जानो अर्थात् विष्णुभक्तमें ये सब गुण अवश्य होतेहैं। तथा च वैष्णवको नित्यनैमित्तिककर्मका तो अवश्य पालन करनाही चाहिये तथापि काम्यकर्मका परित्याग कर जो मोक्षके प्रति केवल भगवत्कृपाको हेतु मानना है उसेही अवाधिगोचरता कहते हैं। अवैष्णवलोग तो मोक्षके प्रति ब्रह्मज्ञानकोही प्रयोजकमात्र मानते हैं।काम्य-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कर्मके परित्यागको भगवान्नेही कहाहै-' सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज' इति । अन्यत्रभी कहाहै-

' सर्वधर्मोज्झिता विष्णोर्नाममात्रैकजल्पकाः ॥ सुखेन यां गतिं यान्ति न तां सर्वेपि धार्मिकाः ॥ '

सकलकाम्यकर्मसे रहितभी तथा सकलकर्मफलको भगवान्में अर्पण करनेवालेभी भगवन्नाममात्रका स्मरण करनेवाले जिस गति (परमधाम) को जाते हैं उस गतिको सर्वधर्मोंका अनुष्ठान करनेवालेभी नहीं जासकते । अर्थात् मोक्षधाम भगवत्कृपामात्रसे प्राप्त होसकताहै इसहेतु भगवत्कृपापरही पूर्णविश्वास रखना चाहिये ॥

पराकाष्ठता शेष इव, सब विध सेवा साज ।
भव दुःख सुख समता लहै, अरु राखे मत लाज ॥ २३ ॥

संसारिक सुखदुःखोंमें सम होकर, यथा श्रीशेषजी भगवान्की सब प्रकारसे सेवा करते हैं एवं जो भगवान् तथा भागवतोंकी सब प्रकारसे सेवा करना है इसे ही

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पराकाष्ठता कहते हैं। शेषजीकृत भगवत्सेवाकी श्रीया-
मुनाचार्यस्वामीनेभी प्रशंसा की है-

'निवासशय्यासनपादुकांशुकोपधानवर्षातपवारणादिभिः। शरीरभेदैस्तव शेषतां गतैर्यथोचितं शेष इतीर्यते जनैः॥'

अर्थात् हे भगवन्! जब आपको गृहकी अपेक्षा होती-
है तो शेषजी गृह बनजाते हैं जब आपको शय्याकी
अपेक्षा होती है तो शय्या बनजाते हैं जब आपको
सिंहासनकी अपेक्षा होती है तो सिंहासन बनजाते हैं
जब आपको पादुकाकी अपेक्षा होती हे तो पादुका
बनजाते हैं जब आपको वस्त्रकी अपेक्षा होती है तो
वस्त्र बनजाते हैं जब तकिएकी अपेक्षा होती है तो
तकिआ बनजाते हैं जब आपको छत्रकी अपेक्षा होती है
तो छत्र बनजाते हैं एवं जिस बस्तुकी आपको अपेक्षा
होती है शेषजी वही वस्तु बनकर आपकी सेवा करते हैं
तथा च आपकी क्रियामात्रमें किंवा प्रत्येक कालमें
शेषजी अपने रूपविशेषों (शय्यादिरूपों) से असीम
सेवा करनेके हेतु आपके वास्तविक शेष होगये हैं अत-
एव उनको लोग जो शेषजी कहते हैं वह यथार्थही
कहते हैं।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

एवं वैष्णवमात्रको भगवद्भागवतसेवा स्वयं सबप्रकारसे करनी चाहिये न कि, भागवतोंके कहनेसेही किंवा रोपीटकर । तथा सांसारिक जो पुत्रकलत्रादि हैं तज्जन्य दुःखसुखमें सम रहना चाहिये अर्थात् दुःखसे उद्विग्नभी न होना चाहिये सुखसे हृष्ट होकर फूलनाभी न चाहिये ।

अरु राखै मत लाज । इसका यही अभिप्राय है कि, संप्रदायके जो आवश्यक कार्य हैं यथा-- तिलक मुद्रा धारण करने द्वयानुसंधान करना अष्टाक्षरका जप करना भगवद्भागवताचार्यसेवा इनपर अधिक ध्यान देवे । और जो जारी चोरी मिथ्यासंभाषणादि पाप हैं उनका परित्याग करे परकीय दोषको न देखे कहाभी है--

'परपरिवादे मूकाः परदोषदर्शनेषु जात्यन्धाः॥
परकथितवचनवधिरास्ते पुरुषा देवतासदृशाः ॥'

अर्थात् जो पुरुष परनिंदा न करतेहैं न सुनतेहैं तथा न परकीय दोषको निहारतेहैं वे पुरुष देवताके तुल्य हैं । भगवान्नेभी कहाहै

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

'आत्मौपम्येन सर्वत्र समं पश्यति योऽर्जुन।
सुखं वा यदि वा दुःखं स योगी परमो मतः॥
न प्रहृष्येत्प्रियं प्राप्य नोद्विजेत्प्राप्य चाप्रियम्।
स्थिरबुद्धिरसंमूढो ब्रह्मविद्ब्रह्मणि स्थितः॥
सुहृन्मित्रार्युदासीनमध्यस्थद्वेष्यबन्धुषु।
साधुष्वपि च पापेषु समबुद्धिर्विशिष्यते॥
यो न हृष्यति न द्वेष्टि न शोचति न कांक्षति।
शुभाशुभपरित्यागी भक्तिमान् यःस मे प्रियः॥
यस्मान्नोद्विजते लोको लोकान्नोद्विजते च यः।
हर्षामर्षभयोद्वेगैर्मुक्तो यः स च मे प्रियः॥' इति

१७ अथ उपायस्वरूपज्ञानता।

उपायसुरूपज्ञानता, जो कोइ विधन बनाय।
अर्चाविग्रहकी कृपा, तरण उपाय मनाय॥२४

संसारसमुद्रतरणके लिए एक भगवत्कृपाही उपाय है यह सिद्ध होचुकाहै उस भगवत्के पांच प्रकारके स्वरूप हैं—१ पर वासुदेव जो श्रीवैकुंठनाथ हैं, २ चतुर्व्यूह अर्थात् वासुदेव संकर्षण प्रद्युम्न अनिरुद्ध, ३ अवतार

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्रीरामश्रीकृष्णादि, ४ अंतर्यामी ५ अर्चाविग्रह जो मंदिरोंमें पूजन किआ जाताहै । इनमेंसे अंतर्यामीपर्यंत चारस्वरूपोंका तो जब अस्मदादिजीवोंको दर्शन भी संभव नहीं तब उनकी कृपाकी चर्चाही क्या, एवं रीत्या संसारसमुद्रतरणकी कोईभी विध, उपाय न पाकर जो अर्चाविग्रहकीही कृपाको दृढविश्वाससे संसारसमुद्रतरणका उपाय मानना है इसी भावनाको उपायस्वरूपज्ञानता कहतेहैं । उपाय संसारतरणोपाय उसके स्वरूपका जो ज्ञान अर्थात् अर्चाविग्रहकी ही कृपा संसारतरणोपाय है यह भावना ही उपायस्वरूपज्ञानता पदार्थ है । कहा भी है—

'यथा सर्पिः शरीरस्थ गवां न कुरुते बलम् ।
निर्गतं धान्यसंयुक्तं दत्तं तासां बलावहम् ॥

अर्थात् यद्यपि दुग्धमेंसे निकलनेवाला घृत गौके भीतरही है तथापि वह गौको बल नहीं बढासकता किंतु दुग्धसे निकालाहुआ अन्नके साथ दियाहुआही गौका बल बढासकताहै । एवं यद्यपि अंतर्यामी भगवान् अपने भीतरही हैं तथापि वह संसारतारमें सहायता नहीं देसकता किंतु अर्चाविग्रहकीही कृपा संसारतारमें प्रधान हेतु है । क्योंकि अर्चाविग्रहभगवान् परमसुलभ दयैक-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

निधि भक्ताधीन समग्र अपराधोंको क्षमा करनेवाले और बाह्येंद्रियोंकेभी गोचर हैं। भक्त भक्तिपूर्वक जैसी सेवा करताहै उसीसे अर्चाविग्रह भगवान् संतुष्ट होजाते हैं तब तो अर्चाविग्रहभगवान्की कृपाको संपादन करना संभव है। कहतेहैं कि, एक वनमें भगवन्मूर्ति थी उसपर छप्परभी न था मंदिरकी तो क्या चर्चा इसहेतु वह भगवन्मूर्ति धूपमें तपरहीथी यह देख एक मार्गजाते भक्तने आतपतापनिवृत्त्यर्थ उस मूर्तिपर छप्पर छादिया। कुछ कालके अनंतर एक भक्त आये उनने देखा कि, यदि वनमें आग लगी तो छप्परको आग लगनेसे भगवान्को अति क्लेश होगा यह शोच वह छप्पर उठादिया भगवान् उक्त दोनों भक्तोंपर प्रसन्नही हुये किसीपरभी कुपित नहीं हुये क्योंकि दोनोंही भक्तोंने जो किया वह भक्तिपूर्वक सोपपत्तिकही किया सो अर्चाविग्रह भगवान् ऐसे दयालु हैं। और भूलचूक कर यदि भक्तसे अपराध भी होजाय तो अर्चाविग्रहभगवान् उस अपराधको भी क्षमा करदेते हैं इस हेतु अर्चाविग्रह भगवान्की कृपा संपादन करनी संभव है। कहते हैं, एक भक्तसे रसोईमें हलदीके स्थानमें पीला संखिया पडगया जब रसोई भोग लगचुकी तो विदित

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हुआ कि रसोईमें संखिया पडगया है संखियायुक्त रसोईके भोग लगानेसे उस महानुभाव भक्तको असीम कष्ट हुआ कष्टनिवृत्तिका कोईभी उपाय न देख भक्तमहात्माने सब परिवारको इकट्ठाकर संखिया युक्त महाप्रसादको पाया तदनंतर भगवन्नामस्मरणका आरंभ करादिआ और मृत्युकी प्रतीक्षा करनेलगे, इतना अपराध होनेपर भी भगवान् कुपित नहीं हुए किंतु भगवत्कृपासे उस महाप्रसाद पानेवालोंका तो एक रोमभी संतप्त नहीं हुआ हाँ वह भगवन्मूर्ति चारोंओरसे फट गई ।

एवं उस अर्चाविग्रहभगवान्की कृपा ही एक संसारसमुद्रतरणका उपाय है । और तो चारों ओर आंख फाडकर देखनेपरभी कोई उपाय प्रतीत नहीं होता एतावता कुछ यहभी नहीं जानना कि,बाह्योपासना ही उचित है मानसिकोपासना उचित नहीं क्योंकि मानसिकोपासनाभी अर्चाविग्रहकीही सेवा है क्योंकि मानसिकोपासनामें भी हृदयमें किसी न किसी भगवद्रूपका

१ पाठक महाशय उनका रोम कैसे संतप्त होता उनने तो परमामृत महाप्रसाद पायाथा इसी भावनासेही तो श्रीमीरांबाई जहरका कटोरा पचागई अन्नके दोष उन्हीको होते हैं जो अस्मदादि महाप्रसादको परमामृत न समझ प्रत्युत अन्न समझ कर पाते हैं ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अवश्य ध्यान करना पडताहै उसकी जो ध्यानसे सेवा करना है वही मानसिकोपासना है कुछ कुरसीपर बैठकर आंख मूंदनेका नाम मानसिकोपासना नहीं प्रत्युत बाह्योपासनासेभी मानसिकोपासना अधिक अभ्यर्ह है क्योंकि बाह्योपासनासे मानसिकोपासना बहुत कठिन है किसी भाग्यवान्कोही प्राप्त होती है।

१८ अथ आत्मारामता।

वरनौं आत्मारामता, दुखसुखसमता होय। लोकविषय विद्वेषमति, हरि विन मम नाहिं कोय॥ २५॥

पुत्रकलत्रादिके संयोगवियोगादिसुखदुःखमें समता हो सुखसे हर्ष न हो और दुःखसे उद्वेग न हो। भगवान्ने कहा भी है—

'समदुःखसुखः स्वस्थः समलोष्टाश्मकाञ्चनः। तुल्यप्रियाऽप्रियो धीरस्तुल्यनिन्दात्मसंस्तुतिः॥ मानापमानयोस्तुल्यस्तुल्यो मित्रारिपक्षयोः।'

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अर्थात् मानापमान सुखदुःख इत्यादि द्वंद्वोंमें धीरको सम होना चाहिये और लौकिक विषयमात्रमें द्वेषमति त्याज्यत्वबुद्धि होनी, क्योंकि वस्तुगत्या लौकिकविषयमात्र दुःखप्रदही है। कहाभी है-

'जायमानो हरेज्जायां वर्धमानो हरेद्धनम् ।
म्रियमाणो हरेत्प्राणान् नास्ति पुत्रसमो रिपुः॥'

अर्थात् पुत्र उत्पन्न होनेलगा स्वजन्मदुःखसे पिताकी भार्याका नाश करता है पुष्ट होताहुआ धनका नाश करता है मरनेलगा पिताके प्राणोंको हरता है इसहेतु पुत्रसमान कोईभी शत्रु नहीं। । तथा-

'वनानि दहतो वह्नेः सखा भवति मारुतः।
स एव दीपनाशाय कृशे कस्यास्ति सौहृदम् ॥'

अर्थात् सबकी मित्रता (प्रेम) समृद्धिके हेतु है क्योंकि जब वनको दग्ध करताहुआ अग्नि समृद्ध होता है तो पवन उसका सखा बनजाता है वही अग्नि जब दीपावस्थानमें कृश होता है तो वही पवन उसको बुझाकर नष्ट करदेता है एवं रीत्या लोकमें किसीकाभी प्रेम सच्चा नहीं, कहाभी है विषयवासना प्रीतमके संग प्रेम निवाहे नार । तथा-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

'दर्शनाच्चित्तवैकल्यं स्पर्शनाद्धनसंक्षयः।
संयोगाद्धरति प्राणान्नारी प्रत्यक्षराक्षसी॥'

अर्थात् स्त्रीको देखते ही चित्तमें विकलता होती है स्पर्श करतेही धन नष्ट होजाता है संयोगवियोगसे प्राणोंको हरती है इसहेतु स्त्री प्रत्यक्षही राक्षसी है। तथा-

'अर्थानामर्जने दुःखमर्जितानां च पालने।
नाशे दुःखं व्यये दुःखं धिगर्थं दुःखभाजनम्॥'

अर्थात् धनके उपार्जनमें भी दुःख उपार्जितके रक्षणमें भी दुःख, उसके नाशमें तथा व्यय करनेमें भी दुःख इसहेतु सबविध दुःखैकानिधि धनको धिक्कार है। तथा-

'अविश्वासनिधानाय महापातकहेतवे।
पितापुत्रविरोधाय हिरण्याय नमो नमः॥'

अर्थात् परम अविश्वासका स्थान धन है। धनके विषयमें किसी परभी विश्वास नहीं होता महापापोंका

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हेतु भी धन है पिता और पुत्रकाभी विरोधसंपादक धन है ऐसे धनके लिये दूरसे ही नमस्कार है । तथा-

'द्रविणं मे च दारा मे बन्धुवर्गश्च मे धनम् ।
इति मे मे प्रकुर्वाणं कालो हन्ति च पूरुषम्॥'

अर्थात् मुझे धन मिले किंवा मेरा धन मेरी पत्नी मेरा बंधु इत्येवं मुझे मुझे मेरा मेरा करते ही जीवको काल रूपी सर्प ग्रास करलेताहै । कहाभी है 'कालो न यातो वयमेव याता तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णाः ।'

इत्येवं रूपेण विषयमात्रको दुःखप्रद जान अतएव विषयको छोड जो श्रीनारायण विना मेरा कोई नहीं श्रीनारायणही सर्वविध मेरा है यह जो भावना है इसेही आत्मारामता कहतेहैं । कहा भी है-

'त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव । त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं मम देवदेव ॥'

---

१ इसी धनके लोभसे मेरे पिता तथा कनिष्ठभ्राता श्रीनिवास देवनायकने मुझे सूखा घरसे निकाल दिया मैंभी संतोष करना उचित समझ अपने दायभागको त्याग सूखाही घरसे निकल आया । आशाहै भगवन् अवश्य मेरे उक्त संतोषसे प्रसन्न होंगे ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आत्मा जो श्रीनारायण है उसमें जो रमण करे अर्थात् चित्तको लगाये रखे उसे वैष्णवलोग आत्माराम कहते हैं। अवैष्णवलोग तो जीवात्मामें ही रमण करनेवालेको आत्माराम कहते हैं सो युक्त नहीं क्योंकि उन लोगोंके आत्मारामसे बढकर पद (दर्जा) नहीं इस हेतु आत्मारामको सबसे उत्कृष्टपदार्थमें रमण करनेवाला होना चाहिए, सबसे उत्कृष्ट तो श्रीनारायणही है जीव तो उसका गर्भदास है इसालिये श्रीनारायणमेंही रमण करनेवालेको आत्माराम कहना चाहिये न कि जीवात्मामें रमण करनेवालेकोभी उसे तो जीवाराम कहना चाहिए। यदि कहो कि, जीव और नारायण (ब्रह्म) तो एक ही पदार्थ है इसालिये जीवात्मामें रमण करना और नारायणमें रमण करना यह एकही बात है तो यह भी युक्त नहीं क्योंकि जीवात्मा और नारायण किसी तरहभी एक नहीं होसकते यहपूर्वही प्रतिपादन करदिया है॥

परिशिष्टांश।

ये अष्टादश रहस्य वैष्णवमात्रको अनुष्ठेय है इनमें ऐसी कोईभी बात नहीं जो किसी भी वैष्णवसंप्रदायके विरुद्ध हो और ये अष्टादशरहस्य ब्रह्मविद्याओंकी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तरह विकल्पास्पदभी नहीं हैं यथा उपनिषदुक्त ब्रह्मविद्याओंमेंसे एकही विद्याकी उपासना करनी चाहिये यह सिद्धांत है क्योंकि ब्रह्म निरतिशय होनेसे जैसाही एक विद्याकी उपासनासे प्राप्त होगा वैसाही अनेक विद्याओंकी उपासनासे प्राप्त होगा इसलिए अनेक ब्रह्मविद्याओंकी उपासना न कर एकही ब्रह्मविद्याके दृढाभ्याससे दीर्घकालपर्यंत उपासना करनी चाहिये श्रीव्यासदेवने एकादशपादमें कहा भी है 'विकल्पोऽविशिष्टफलत्वात्' अर्थात् ब्रह्मविद्या सबही एकसमान फलप्रद हैं इसलिये उनकी उपासनामें विकल्प है नाम एकही ब्रह्मविद्याकी उपासना करनी चाहिये ।

एवं इन अष्टादशरहस्योंमें विकल्प नहीं अर्थात् एकही रहस्यकी उपासना करनी चाहिए यह नियम नहीं और रहस्योंमें परस्पर विरोध भी नहीं इस हेतु एकभी पुरुष समग्र अष्टादशरहस्योंकी उपासना करसकता है इसलिये यथासामर्थ्य रहस्योपासनाको बढनाही चाहिये ।

यदि कहो कि जो ऐकांतिक है वह परमैकांतिक नहीं होसकता, और जो परमैकान्तिक है वह एकान्तिक नहीं होसकता इसका यह उत्तर है कि, यद्यपि एककालमें ऐकांतिकभी होय परमैकांतिकभी होय यह संभव

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नहीं तथापि कालभेदेन होसकता है यथा प्रथम जो ऐकांतिक है वह यदि अपनी उपासनाको बढाकर संसारसे भीत होकर सर्वात्मना आचार्यके अधीन होजायगा तो परमैकांतिकभी होजायगा तथा च एककालमें चाहे समग्ररहस्योंकी उपासना न होसके तथापि कालभेदेन तो समग्ररहस्योंकी उपासना होनेमें सिवाय प्रारब्धके और कोई प्रतिबंधक तथा असंभव नहीं और यद्यपि ऐकांतिक परमैकांतिक नहीं कहासकता तथापि यथा कोटिपति लक्षपतिभी कहासकता है एवं परमैकांतिक तो ऐकांतिक भी कहासकता है क्योंकि ऐकांतिकोपासना परमैकांतिकोपासनाके अभ्यंतर्गत है एवं औरभी रहस्योंका यथायोग्य समुच्चय जानना।

हे पाठकवर ! नरचक्रकोटीरें कुछक हृदयके नेत्र खोलकर देखिये सब कुछ होसकता है जीव जो चाहे वह सिद्ध होसकता है, आपकेभी सभी इष्ट सिद्ध होजायँगे किंतु आप अपने संप्रदायके प्राचीनमार्गको मत छोडिये। आज कल्ह जो विदेशीभजनोंके दोषोंको ग्रहण करनेवाला एक भारी मंडल संपन्न होगया है आप उससे पृथक् रहो उस मंडलमें अपने श्रीचरणारविंदको मत रखिये। इस नूतनमंडलका केवल दोषग्रहण कर-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नाही एक उदेश्य है अन्यथा यह मंडल बूट पटलून पहिरनेके सिवाय कुछ औरभी सीखता यदि सीखाभी होगा तो दोषही सीखा होगा और यह मंडल इतना बढगया है कि, चारों ओर यही मंडल दिखाई देता है।

हमारी प्राचीन सत्संप्रदायोंको नष्ट करनेके लिये आज अनेक नूतन पंथ बडी बडी तयारीसे कमर बांध रहे हैं। आजतक उन नूतनपंथोंमें उन्हीं लोगोंका प्रवेश था जिनके बापदादानेभी कभी भारतवर्षीय किसी सत्संप्रदायका विशेषकर ग्रहण नहीं कियाथा, खेदका स्थान है कि, अब तो सत्संप्रदायानुयायी लोगभी उन नूतन कुपंथोंमें प्रवेश करने लगे हैं। हमारी सत्संप्रदायोंको हमारे पूर्वाचार्योंने जैसा उपपन्न कियाहै तथा वर्तमानकालिकभी विद्वान् सत्संप्रदायोंको बहुत कुछ उत्पन्न करसकते हैं यह बातभी एक ओर रहो, किंतु नूतनकुपंथोंमें प्रवेश करनेवालोंने प्राचीनसत्संप्रदायके आश्रयसे नरक प्राप्ति तथा नूतनकुपंथके आश्रयणसे मोक्ष प्राप्ति होगी यह कैसे जाना ?। यदि सत्संप्रदाय तथा नूतनकुपंथके आश्रयणका फल मरणानंतरभावी इदानीं अप्रत्यक्षही है तब सत्संप्रदायको छोड नूतनकुपंथको

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

किस विश्वासपरलोग पकडते हैं यह कुछ विदित नहीं होता न इसका उत्तरही संभव है।

और यहभी सर्वजनप्रसिद्ध है कि, अभीतक सत्संप्रदायोंमें जैसे कुछ उत्तम विद्वान् हैं उनके छात्रोंके छात्रोंकीभी समता रखनेवाले विद्वान् नूतनकुपंथोंमें नहीं हैं तब उन नूतनकुपंथोंपर विश्वास होनेका कुछ हेतुभी पाया नहीं जाता। और पारलौकिक उपकारको पंडितमात्र चाहताहै यदि च नूतनकुपंथोंके सिद्धांतभी वास्तविक शास्त्रीय तथा परलोकोपकारक होते तो सत्संप्रदायी विद्वानोंने क्या भांग पी है जो वे उन सिद्धांतोंको न मानते। यदि कहो कि, तब क्या नूतन कुपंथ विरोधमात्रसे उत्पन्न हुए है? इसका उत्तर यही हैं कि, कुछ तो विरोधभी हेतु है और यह तो आपभी जानतेही हैं कि यह कालियुग है पूर्वयुगोंसे कलियुग जो निकृष्ट कहाताहै वह धर्मकेही विषयमें निकृष्ट कहाताहै, कलियुगमें सद्धर्म नष्ट होते हैं असद्धर्म उत्पन्न होते हैं यहभी आप जानते हैं. तब यदि नूतन कुपंथ वस्तुगत्या सद्धर्म होते तो पूर्वयुगोंमेंही प्रकट होते किंवा अनादिकालसेही होकर कलियुगमें तो प्रत्युत सत्संप्रदायोंके तुल्य ह्रासको प्राप्त होजाते, कलिमें प्रत्युत ह्रासको प्राप्त

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

न होकर नूतन कुपंथ जो उन्नत होरहे हैं इसीसे आप जानाचाहें तो जानसकते हैं कि नूतनकुपंथ कल्पित हैं, अन्यथा आपको यही कहना पडेगा कि, कलियुगही पूर्वयुगोंसे उत्तम युग है। इसहेतु इन नूतनकुपंथोंको छोड आपको अपने प्राचीनसत्संप्रदायपर अवश्य ध्यान देना चाहिए आगे आपका अधिकार है।

बडेही खेदका स्थान है कि, अपने देशीय उत्तम विद्वानोंके चरणकोभी न देखकर तथा आप सज्जन सत्संप्रदायी होकरभी विदेशीयलोगोंके व्याख्यानको सुनकर कहते हैं कि ऐसा वक्ता हमारे देशमें नहीं है यद्यपि विदेशीय लोग अपनी कलपेचकी विद्याको उत्तमरीतिसे जानते हैं तथापि वे हमारी वेदांतादि विद्याको कुछ उत्तम नहीं जानते विदेशीलोगोंने वेदांतादिविद्यामें जो कुछ लेशमात्र ज्ञान संपादन किया है वहभी हमारे देशीविद्वानोंसेही, जो वे हमारे ग्रंथोंका अपनी भाषामें अनुवाद करते हैं वहभी हमारे देशी विद्वान्कीही पूर्ण सहायतासे इसीसे आप चाहें तो जानसकते हैं कि, हमारी विद्याओंमें हमारे विद्वानोंको अधिक प्रवीणता है वा विदेशियोंको अधिक प्रवीणता है, किंतु यह सब तो तब मुझे यदि आप न्यायदृष्टिसे देखें जब

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कि आपने कसम ही खाली है कि, विदेशीयवस्तुही पसंद करनी तब तो आपको विदेशीय लोहेके स्थानमें भारतीय सुवर्णभी पसंद होना असंभव है शोकका स्थान है कि, आप इस अपने शरीरसे विदेशीय युवतीके उदरसे जन्म नहीं ले सकते अन्यथा भारतमें जन्मका भी पश्चात्ताप आपका दूर होजाता।

जैसे आप विदेशीय अल्पज्ञोंको गुरु बनाते हैं यदि वैसे स्वदेशीय वास्तविक विद्वानोंको गुरु बनाते तो देखो कैसा अच्छा तथा देशका मंगल और आपको लाभ भारी होता। आप अपने धनको विदेशीयजनोंको जो चन्दा देदेकर नष्ट कर रहेहैं उस धनको यदि अपने पुत्र पौत्रके लिये इकठा करते किंवा स्वदेशीय अनाथोंको देते किंवा स्वदेशीय किसी उत्तम विद्वान् वा आचार्य्यके द्वारा व्यय करते तो कैसा अच्छा होता, किंतु यह सब बिना सत्ययुग आये भारतको कभी न सूझेगी हमारा रोना तो व्यर्थ है हमारे रोनेपर आपभी ध्यान दें यह आशाही नहीं क्योंकि भगवदिच्छा ही ऐसी है कि, नूतन कुपंथ उन्नत हों तब किसीके रोए क्या बनसकताहै और यदि कुपंथ उन्नत न हों तो यह काल कलियुग कैसे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कहावे हे सज्जनो ! आंख खोलो अपनी संप्रदायको तनिक प्रेमसे देखो आपके स्वयंही सब संदेह दूर होजायँगे आपके जो धर्मविनाश, तथा अधर्मोन्नतिके लिये मनोरथ हैं उनको तो भगवान् स्वयंही पूर्ण करदेगा फिर आप नाहक क्यों कलंकपात्र बनते हैं अधर्मोन्नतिके लिये अभी बहुत काल शेष पडा है आप घबराइए मत । लौकिक जो कुछ सुख व दुःख है वह सब स्वप्रारब्धानुसारही प्राप्त होता है प्रारब्धतो कर्मविशेष ही है तब क्या आप सत्संप्रदायी होकर सत्कर्म नहीं करसकते किंवा नूतन कुपंथानुयायी होकर क्या पाप नहीं करसकते ? फिर आप क्यों भेडचालसे अपने धर्मको छोड कुपंथ गढेमें गिरते हैं आपका इसी शरीरसे परमधाममें वा स्वर्गमें पहुंचानेका तो कुपंथी भी ठेका नहीं लेते फिर आप क्यों कुपंथियोंमें मिलतेहैं, कुपंथ पकडनेसे यदि आपको नरक हुआ तो क्या आप यहां आकर कुपंथियोंको कुछ उपालंभ देसकेंगे ? यदि आप परम धाममें पग रखना चाहते हैं हैं तो इन अष्टादशरहस्योंकी उपासना करो ।

आप अपने मुख मातापिता धर्म तथा देशकी ओर देखिये तब मेरा कहा आपको अवश्य रुचित होगा ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अपने संप्रदायको निवाहो यदि स्वसंप्रदायमें संदेह है तो स्वयं शास्त्र पढकर संप्रदायमूलको विचारो आपके संदेह दूर होजायँगे। यदि स्वयं शास्त्र पढनेकी सामर्थ्य नहीं तो अपनी संप्रदायके किसी विद्वान् आचार्यके पीछे लगो उनकी सेवा करो वे आपके संदेहको दूर करदेंगे। किंतु कुपंथियोंके पीछे लगकर अपना लोक-परलोक मत बिगाडो। आप इन अष्टादशरहस्योंकी भक्तिपूर्वक वास्तविक उपासना करो आपके संदेह स्वयंही निवृत्त होजायँगे यदि न निवृत्त हों तो मैं जिम्मेवार हूं। अष्टादशरहस्योंका अनुवाद पूर्वही समाप्त होचुका है तथापि आपलोगोंके उपकारार्थ यह कुछ थोडासा लिखा है आशा है आप इसपर ध्यान दे अष्टादशरहस्योंकी उपासनामें मनको लगायँगे॥ कहो-श्रीहरये नमः। श्रियै नमः। श्रीमते रामानुजाय नमः। अस्मद्गुरुभ्यो नमः।

इति पञ्चनदीयपंडित सुदर्शनाचार्यसंकलिता
अष्टादशरहस्यभाषा समाप्ता।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ

॥ श्रीश्रीसृतियतीन्द्रवन्दना ॥

संसाराम्भोधिभङ्गैर्गतशिवविषये यातचेतः-
प्रवृत्तिं जीवं ग्रीवानिधेयं मणिमिव विगुण-
व्यस्तहारप्रकीर्णम् । नीत्वोन्नेतुं मुरारेः पद-
नलिनजलात्पद्मवासा सृतीशा भूतग्रामेऽव-
तीर्णा जयति जननता कापि कारुण्यमू-
र्तिः ॥ १ ॥ चञ्चच्चम्पकचारुनेत्रचषकैरा-
चम्यमानम्मुहुर्मुक्तैर्मर्त्यविमुक्तिकृत्कुमुदभि-
त्कृन्तत्कलाधेः कथाम् । श्रीमच्छ्रीरमण-
प्रसादविभवो वीक्ष्यं शुभानां भरे रूपं
तद्भवकृन्तनं विजयतां यातीन्द्रचन्द्रं सदा
॥ २ ॥ भवाब्धिभयविह्वलाञ्जननयातना-
यन्त्रिताञ्जनानवतियः सदा करुणमूर्ति-
रामानुजः । रमामतमहार्णवे वरदरक्तिर-
त्नाकरे उपासनबृहत्तरे जयति कर्णधारो

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नवः ॥ ३ ॥ वर्णयन्ति वसुधापतनौ यद्भू-
मिभृत्त्वमिह दर्शनविज्ञाः । वास्तवं त्वयि
समन्वितमेतच्छेषरूपपरिभूषितकाये ॥४॥
सोपानं मुक्तिधाम्नो भुवि रजतमयं दर्पणो
व्यासवाचां नौका संसारसिन्धौ कलिमल-
हरणे कातकी चूर्णिका वा । ब्रह्मज्ञाना-
र्द्रचेतःकुमुदविकसितौ शारदी चन्द्रिकैव
वेदान्तस्यैकभूमिर्जयति यतिविधो वैष्णवं
ते सुभाष्यम् ॥ ५ ॥ दयानिधे भूतपुरी
जनिस्ते सामान्यतो भूतदयां व्यनक्ति ।
भूतो न वा नास्म्यथ वा न भावी तत्किं
दयां मय्यपि नो तनोषि ॥ ६ ॥ यदी-
क्षसे योगपथेन शुद्धिस्ते चेतसः स्यादिति
पालयिष्ये । पङ्केषु जीर्णं वसनं कदा-
चित्किं याति शौक्ल्यं वदमात्रयापि ॥७॥
नाहं तदा त्वां परिपालयिष्यते यदीति ते

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

चेतसि संनिविष्टम् । आस्तां तथाहं निरयं साहिष्ये किं तु प्रभावे तव लाञ्छनं स्यात् ८। ईहा शुभे यदि मुकुन्दपदं भजस्व पीयूषदीधितिमुखीषु रतिं त्यज त्वम् । भूयो मदुक्तमपि वक्रमिदं मनो मे त्वं शाधि तन्निजफणानिलदोषशोषैः ॥ ९ ॥ लोकेषु तत्किं न यदस्ति रम्यं रम्यं च तत्किं न यदस्ति हारि । हृतस्तुको यो न विहीयतेऽर्थान्न बुध्यतेर्थादपि हृद्विहीनम् ॥ १० ॥ आरोहणं दूरमितः परं यन्मनस्त्वदीयं पतनाय मध्ये । विसृज्य तत्काममहीरुहं श्रीयतीन्द्रचन्द्रस्य पदं भजस्व ॥ ११ ॥ त्रैविक्रमीं रीतिमयाऽवनाशिनीं न वीक्षते चित्तमिदं मदालसम् । समस्तदोषाप्तनिषद्वरे पथि पदे पदे याति रसातलं प्रभो ॥ १२ ॥ भ्रमामि रामतापतस्स्खलन् स्खलन् पदे पदे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

त्वदीयपादपङ्कजं विनाश्रयो न वीक्ष्यते। प्रदर्श्यतां तदेव मे यतीन्द्र हे कृपानिधे भवाब्धिपारतारकं स्वकीयपादपंकजम् ॥१३॥ न स्थानतोपि सूत्रेण निर्विशेषत्वलालनम्। (युग्मकम्) परेषां सर्वथा नूनमाग्रहैकनिदानकम् ॥ १४ ॥ निरस्ताखिलदोषत्वात् कल्याणगुणयोगतः। जीवदोषवियुक्तत्वकथनं तव निर्मलम्॥ १५ ॥ सदाकाराऽसदाकारा प्रतीतिरुभया मता। (युग्मकम्) प्रतीतेर्विषयो नास्ति सदसद्भ्यां विलक्षणः ॥१६॥सर्वं सर्वप्रतीतिः स्यादन्यथा विषयः स्फुटम्। अद्वैतवादिनं ह्येतत्प्रत्युक्तं सर्वतो जयि ॥ १७ ॥ तवेति शेषः। आत्मा विज्ञानमेवेति पूर्वपक्षसमाश्रयात्। तद्गुणसारसूत्रस्य व्याख्या सर्वमनोहरा॥ १८ ॥ अणुत्वं पूर्वसूत्रेभ्यो जीवस्याशङ्क्य शांक-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रम् । तद्गुणसारसूत्रेण महत्त्वं कथनं मुधा ॥ १९ ॥ श्रुतियुक्तिविचारान्तं गत्वा गत्वा पुनः पुनः । जीवस्याणुत्वमेवात्र स्वरूपं प्रतिपद्यते ॥ २० ॥ निर्विशेषे प्रमाणानां विरहादिति ते वचः । तूलपिंडे-ग्निमात्रावान्निर्विशेषोक्तिभस्मकृत् ॥ २१ ॥ शक्नोति कस्तव यतीन्द्र विना प्रसादं तं ते प्रशंसितुमुदग्रमिमं प्रभावम् । त्रैलोक्यपान-भरभूरिगुरुर्मुरारिस्तेङ्के समाविशति कैरवके यथालिः ॥ २२ ॥ पूर्वप्रसिद्धरसपारदवाद-वादिसंसेव्यमानगुटिकारजसा समस्ते । श्रीपादरेणुनिकरः प्रतिभाति किं तु शक्नो त्ययं परमधाम्न्यपि नाथ नेतुम् ॥ २३ ॥ त्वदंघ्रिनीरेण विशुद्धविग्रहा सुदर्शनांकेन समुद्रदोर्लताः । निधाय गोविन्दरन्ति जना हृदि विशन्ति मोक्षापरनामधामनि ॥ २४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मथ्नाति दोषनिकरः करणप्रमाथी चेतोपि लाघवमवाप च दिष्टदोषात् । अस्तं जगाम सुमतिस्तमसाऽऽवृतोहं नाथ त्वदीयचरणं शरणं ममास्ति ॥ २५ ॥ प्रतिकूलपथं याति मनो यद्दासतां गतम् । मन्ये नारायणस्यैषा भगवन् मयि रुष्टता॥२६॥ श्रीरामनामवचनामृतगर्भितानि वैकुण्ठकीर्तिपरिरम्भसितानि तानि । पद्मालयारमणषट्पदशोभितानि वन्दे त्वदीयमुखपङ्कजकुड्मलानि ॥ २७ ॥

इति पञ्चनदीयपण्डितसुदर्शनाचार्यप्रणीता श्रीश्रीसातियतीन्द्रवन्दना समाप्ता।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्रियै नमः ।

श्रीमते रामानुजाय नमः ।

स्वनिर्मितऊर्ध्वपुंड्रबंधः ।

वन्दे देवादिदेवीयं यन्नमन्ति मुनीश्वराः ।
दिव्यं पत्कमलं विष्णोर्देवीं श्रीललनां हरेः ॥ १ ॥

पञ्चनदीय सुदर्शनाचार्यः ।

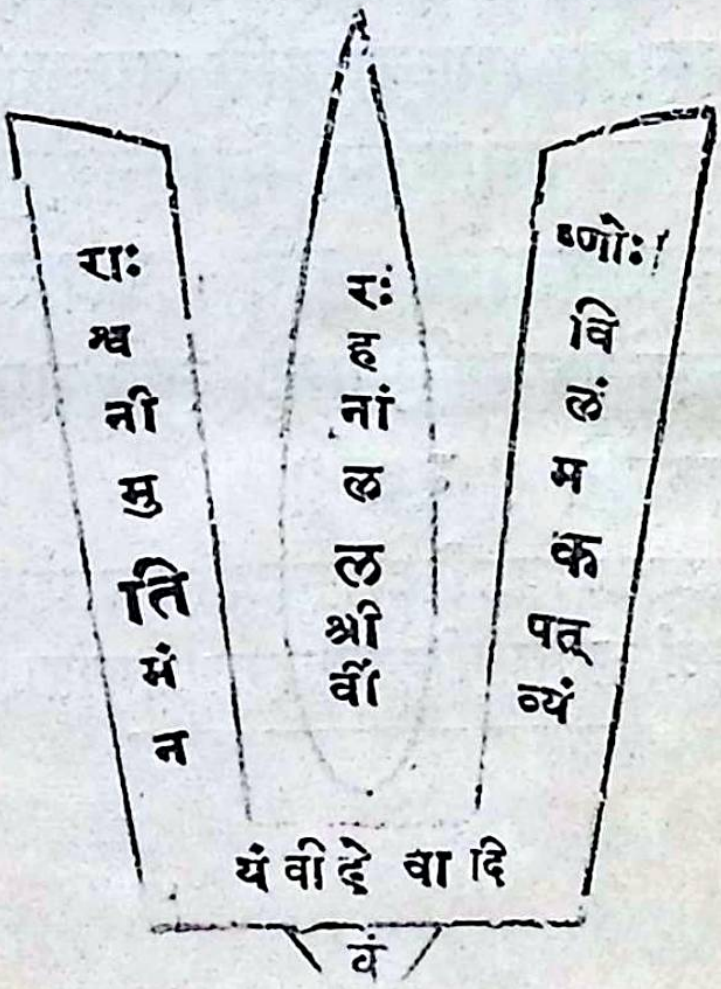

पंञ्चनदीय पण्डित सुदर्शनाचार्यः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जाहिरात.

रामानुजसंप्रदायग्रन्थाः ।

	की॰ रु॰ आ॰
श्रीआल्वारचरितामृत्त	०–४
स्त्रीचर्या	०–१॥
श्रीरंगदेशिकशतक	०–२
संस्कृत भाषा	०–२
आलवन्दार मूल	०–१
आलवन्दार भा॰ टी॰	०–६
कुदृष्टिध्वांतमार्तंड २।३।४ मयूख	०–१०
गुरुपरंपरा श्रीवल्लभसम्प्रदाय	०–२
गोवर्द्धनपीठाधिकृताचार्याणाम् (गुरुपरम्परा)	०–२
गोदास्तोत्र अथवा लक्ष्मीस्तोत्र	०–३
गोवर्द्धनसूरिप्रभाव वृन्दावनस्वामी....	०–४
दुर्जनकारिपंचानन भाषा स्वामीरंगाचारी द्वारा जयपुर महाराजके प्रश्नोंका उत्तर	०–५
द्राविडाम्नायस्तोत्र	०–१
बृहस्तोत्ररत्नावलीरामानुजसांप्रदायी भाग १ ला इसमें ६२ स्तोत्र हैं	१–८
” ” भाग २	१–८
” ” भाग ३	१–८

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

	की० रु० आ०
नारायणसारसंग्रह	०-६
परतत्त्वनिर्णय	०-२
ब्रह्मोत्सव आनन्दनिधि दोहावलीसहित	०-८
भगवद्धर्मदर्पण	१-०
मुकुन्दमाला	०-१॥
भूतपुरीमाहात्म्य	०-४
मूर्तिमण्डन संस्कृत	०-२
रहस्यत्रय भाषाटीका	०-४
रामपटल	०-४
रामानुजाष्टपदी	०-३
वेदोक्तरामपद्धति बडी	०-८
वैष्णवधर्मरत्नाकर भाषाटीकासहित	३-८
वैष्णवकुलभूषण-भा० टी०	१-०
वैष्णवधर्मशिक्षा	०-२
सभापात्रिका	०-१
सन्मार्गदीपक	०-१२
सन्मार्गसंदर्शनम्	०-४
श्रीकाशीमाहात्म्य-पञ्चकोशी सहित (भाषा चौपाईमें)	०-३

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

	की. रु. आ.
सुदर्शनशतक संस्कृत	०-३
स्तोत्रदशकम्	०-४

वल्लभसम्प्रदायग्रन्थाः ।

सम्प्रदायकल्पद्रुम	५-०
दो सौ बावन वैष्णवकी वार्ता और चौरासी वैष्णवोंकी वार्ता सरल व्रजभाषामें बडा अक्षर दोनों पुस्तककी एक जिल्द ग्लेज	७-०
तथा दोनों पुस्तककी एक जिल्द रफ कागज	६-०
दो सौ बावन वैष्णवोंकी वार्ता बडा अक्षर सरल व्रजभाषामें ग्लेज कागद	४-०
तथा रफ कागज	३-०

पुस्तकें मिलनेका ठिकाना-

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस.
कल्याण-मुंबई.

खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस.
खेतवाडी-मुंबई.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

" लक्ष्मीवेंकटेश्वर " स्टीम्—यन्त्रालयकी परमोपयोगी स्वच्छ शुद्ध और सस्ती पुस्तकें ।

यह विषय आज ४० । ५० वर्षसे अधिक हुआ भारतवर्षमें प्रसिद्ध है कि, इस यन्त्रालयकी छपीहुई पुस्तकें सर्वोत्तम और सुन्दर प्रतीत तथा प्रमाणित हुई हैं सो इस यन्त्रालयमें प्रत्येक विषयकी पुस्तकें जैसे—वैदिक, वेदान्त, पुराण, धर्मशास्त्र, न्याय, मीमांसा, छन्द, ज्योतिष, काव्य, अलंकार, चम्पू, नाटक, कोष, वैद्यक, साम्प्रदायिक तथा स्तोत्रादि संस्कृत और हिन्दी भाषाके प्रत्येक अवसरपर विक्रीके अर्थ तैयार रहते हैं. शुद्धता स्वच्छता तथा कागजकी उत्तमता और जिल्दकी बंधाई देशभरमें विख्यात है. इतनी उत्तमता होनेपरभी दाम बहुतही सस्ते रक्खे गये हैं और कमीशनभी पृथक् काट दिया जाता है. ऐसी सरलता पाठकोंको मिलना असंभव है संस्कृत तथा हिन्दीके रसिकोंको अवश्य अपनी २ आवश्यकतानुसार पुस्तकोंके मंगानेमें त्रुटि न करना चाहिये, ऐसा उत्तम, सस्ता और शुद्ध माल दूसरी जगह मिलना असम्भव है सूचीपत्र मंगा देखो.

पुस्तकें मिलनेका ठिकाना—गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास, " लक्ष्मीवेंकटेश्वर " छापाखाना, कल्याण—मुंबई.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

" लक्ष्मीवेंकटेश्वर " स्टीम्—यन्त्रालयकी परमोपयोगी स्वच्छ शुद्ध और सस्ती पुस्तकें ।

यह विषय आज ४० । ५० वर्षसे अधिक हुआ भारतवर्षमें प्रसिद्ध है कि, इस यन्त्रालयकी छपीहुई पुस्तकें सर्वोत्तम और सुन्दर प्रतीत तथा प्रमाणित हुई हैं सो इस यन्त्रालयमें प्रत्येक विषयकी पुस्तकें जैसे—वैदिक, वेदान्त, पुराण, धर्मशास्त्र, न्याय, मीमांसा, छन्द, ज्योतिष, काव्य, अलंकार, चम्पू, नाटक, कोष, वैद्यक, साम्प्रदायिक तथा स्तोत्रादि संस्कृत और हिन्दी भाषाके प्रत्येक अवसरपर विक्रीके अर्थ तैयार रहते हैं. शुद्धता स्वच्छता तथा कागजकी उत्तमता और जिल्दकी बंधाई देशभरमें विख्यात है. इतनी उत्तमता होनेपरभी दाम बहुतही सस्ते रक्खे गये हैं और कमीशनभी पृथक् काट दिया जाता है. ऐसी सरलता पाठकोंको मिलना असंभव है संस्कृत तथा हिन्दीके रसिकोंको अवश्य अपनी २ आवश्यकतानुसार पुस्तकोंके मंगानेमें त्रुटि न करना चाहिये, ऐसा उत्तम, सस्ता और शुद्ध माल दूसरी जगह मिलना असम्भव है सूचीपत्र मंगा देखो.

पुस्तकें मिलनेका ठिकाना—गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
" लक्ष्मीवेंकटेश्वर " छापाखाना, कल्याण—मुंबई.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection